खण्ड-359, अंक-2
बुधवार, 13 माघ, शक संवत् 1904
(2 फरवरी, 1983 ई0)

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 359 में 10 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:

निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, उत्तर प्रदेश (भारत)

1983

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे।

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये।

उत्तर प्रदेश विधान सभा

दिनांक 2 फरवरी, 1983

विधान सभा की बैठक सभा मण्डप, लखनऊ में 11 बजे दिन में अध्यक्ष, श्री धर्म सिंह की अध्यक्षता में आरम्भ हुई।

उपस्थित सदस्य–365

अकबर हुसैन, श्री — मुरादाबाद
अकबाल हुसैन, श्री — गोंडा
अजहर इमाम, श्री — मिर्जापुर
अजीत कुमार सिंह, श्री — कानपुर
अजीत सिंह सेठी, श्री — मेरठ
अनवार खां, श्री — अलीगढ़
अनवार मुहम्मद खां, श्री — फर्रुखाबाद
अबुल कलाम, श्री — आजमगढ़
अमरनाथ सिंह, (उर्फ अनिल सिंह) — फतेहपुर
अमर सिंह, श्री — सहारनपुर
अम्बा प्रसाद वर्मा, श्री — बरेली
अम्बिका सिंह, श्री — बस्ती
अम्मार रिजवी, श्री — सीतापुर
अलमेलु अम्माल, कुमारी — बस्ती
अशफाक अहमद अंसारी, श्री — बरेली
अशोक कुमार वाजपेयी, श्री — इलाहाबाद
इन्द्रजीत, श्री — फतेहपुर
इन्द्र प्रताप सिंह, श्री (लल्लू) — बहराइच
ईश्वर दयाल त्यागी, श्री — गाजियाबाद
ईश्वर शरण विद्यार्थी, श्री — इलाहाबाद
उदयवीर सिंह, श्री — शाहजहांपुर
उपेन्द्र बहादुर सिंह, श्री (उर्फ सुल्तन भैय्या) — खीरी
उमेश्वर प्रताप सिंह, श्री — गोंडा
उर्मिला अग्निहोत्री, कुमारी, — एटा
उदल, श्री — वाराणसी
ए0 सी0 ग्राइस, श्री — नाम निर्देशित आंग्ल भारतीय
ओम प्रकाश जिन्दल, श्री — आगरा
ओम प्रकाश रिछारिया, श्री — ललितपुर
कन्हैया लाल, श्री — मथुरा
कन्हैया लाल, महेन्द्र, श्री — लखनऊ
कमला दरियाबादी, श्रीमती — कानपुर
कमला देवी, श्रीमती — हरदोई
कमला प्रसाद सिंह, श्री — जौनपुर
कमला साहनी, श्रीमती — बस्ती
कल्याण सिंह सोलंकी, श्री — बरेली
कल्लू राम, श्री — मिर्जापुर
काशीनाथ मिश्र, श्री — बलिया
किशोरी शुक्ला, श्रीमती — गोरखपुर
कुंवर बहादुर मिश्र, श्री — हमीरपुर
कुदरिया बेगम, श्रीमती — हरदोई
कुबेर भण्डारी, श्री — देवरिया
कृष्ण कुमार शुक्ल, श्री — रायबरेली
कृष्णदत्त, श्री (उर्फ बालराज) — फतेहपुर
कृष्ण मगन सिंह, श्री — बाराबंकी
कृष्णबीर सिंह, श्री — बदायूं
केदार सिंह, श्री — आजमगढ़
केदार सिंह, श्री — गोरखपुर
केशरी प्रसाद, श्री — जौनपुर
केशोराम, श्री — बदायूं
कैलाश टण्डन, श्री — वाराणसी
कैलाश प्रसाद, श्री — गोरखपुर
खरगत, श्री — वाराणसी
खान गफरान जाहिदी, श्री — फतेहपुर
खुदादीन अन्सारी, श्री — देवरिया
खुर्शेद अहमद, श्री — बहराइच
खुशहाल सिंह रागड़, श्री — टिहरी गढ़वाल
खैरुल बशर, श्री — आजमगढ़
ख्वाजा हलीम, श्री — अलीगढ़
गंगा सागर शंखवार, श्री — कानपुर
गजेन्द्र सिंह, श्री — इटावा
गजेन्द्र सिंह, श्री — बाराबंकी
गया सिंह, श्री — उन्नाव
गुलाम नबी, श्री — आगरा
गेंदा देवी, श्रीमती — बस्ती
गोपीनाथ दीक्षित, श्री — उन्नाव
गोपी नाथ वर्मा, श्री — फैजाबाद
गोरे लाल शाक्य, श्री — इटावा
गोवर्धन तिवारी, श्री — अल्मोड़ा

गौरी देवी, श्रीमती	गोरखपुर
गौरी शंकर एडवोकेट, श्री	इटावा
गौरी शंकर भैय्या, श्री	बलिया
चन्दन सिंह, श्री	मथुरा
चन्द्र प्रकाश शर्मा, प्रो0	बांदा
चन्द्रबली ब्रह्मचारी, श्री	आजमगढ़
चन्द्र मोहन सिंह नेगी, श्री	पौड़ी गढ़वाल
चन्द्र शेखर त्रिवेदी, श्री	लखनऊ
चन्द्र सिंह, श्री	मेरठ
चारु चन्द्र ओझा, श्री	पिथौरागढ़
चेतराम गंगवार, श्री	बरेली
छत्तर सिंह, श्री	बुलन्दशहर
छेदा लाल चौधरी, श्री	खीरी
जंग बहादुर, श्री	जौनपुर
जगदीश नरायन, श्री	फतेहपुर
जगदीश प्रसाद, श्री	इलाहाबाद
जगदीश सिंह, श्री	शाहजहांपुर
जगदीश सिंह यादव, श्री	मैनपुरी
जटाशंकर सिंह, श्री	बहराइच
जनार्दन प्रसाद ओझा, श्री	गोरखपुर
जफर अली नकवी, श्री	खीरी
जमुना प्रसाद, श्री	बाराबंकी
जयदीप सिंह बरार, श्री	बरेली
जसवन्त सिंह बिष्ट, श्री	अल्मोड़ा
जावेद अली, श्री	मथुरा
जितेन्द्र पाल सिंह, श्री	मुरादाबाद
जियाराम शुक्ल, विकल 'साकेती', श्री	फैजाबाद
जीराज सिंह मौर्य, श्री	मुरादाबाद
जैराज गौतम, श्री	सुल्तानपुर
झग्गड़ सिंह, श्री	मेरठ
झिलमिट राम, श्री	गाजीपुर
तपेश्वर, श्री	आजमगढ़
तेजनरायन त्रिवेदी, श्री	खीरी
तेज बहादुर गंगवार, श्री	पीलीभीत
तेज बहादुर सिंह, श्री	जौनपुर
थम्मन सिंह गहलौत, श्री	बिजनौर
दयाल कृष्ण, श्री	मथुरा
दलजीत सिंह, श्री	रामपुर
दल सिंगार, श्री	आजमगढ़
दामोदर शर्मा, श्री	मेरठ
दीना नाथ, श्री	बस्ती
दीपक कुमार, श्री	मुजफ्फरनगर
दीप नरायन बन महन्थ, श्री	गोंडा
दीपू उर्फ दीप नारायण, श्री	आजमगढ़

दुर्गा प्रसाद मिश्र, श्री	देवरिया
दूधनाथ राजभर, श्री	आजमगढ़
देवी प्रसाद, श्री	बहराइच
देवेन्द्र बहादुर सिंह चन्देल, श्री	कानपुर
द्वारिका नाथ धवन, श्री	देहरादून
धनी राम वर्मा, श्री	इटावा
धनेश्वरी देवी, श्रीमती	वाराणसी
धरमपाल, श्री	बहराइच
धर्मपाल सिंह, डाक्टर	अलीगढ़
धर्मवीर सिंह त्यागी, श्री	मुजफ्फरनगर
धर्म सिंह, श्री	बुलन्दशहर
धूप राय, श्री,	देवरिया
नकली सिंह, श्री	मुजफ्फरनगर
नत्थू लाल, श्री	हरदोई
नन्द किशोर सिंह, श्री	देवरिया
नन्द राम, श्री	बरेली
नरेन्द्र सिंह, श्री	मेरठ
नरेन्द्र सिंह बिष्ट, श्री	पिथौरागढ़
नरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री	हरदोई
नाजिर अली, श्री	शाहजहांपुर
निजाज हसन खां, श्री	प्रतापगढ़
निर्भय नारायण सिंह, श्री (उर्फ लाल बाबू)	बलिया
नेत्रपाल सिंह, श्री	एटा
नौनिहाल सिंह, चौधरी	इलाहाबाद
पंचानन राय, श्री	आजमगढ़
पन्ने लाल, श्री	गोरखपुर
परमाई लाल, श्री	हरदोई
परमात्मा प्रसाद सिंह, श्री	बस्ती
परागी लाल चौधरी, श्री	सीतापुर
पहलवान, श्री	जौनपुर
पारवती देवी, श्रीमती	बाराबंकी
पुष्पा चौहान, श्रीमती	अलीगढ़
पूरन चन्द्र, श्री	अलीगढ़
प्रताप नारायण द्विवेदी, श्री	हमीरपुर
प्रदीप कुमार यादव, श्री	बाराबंकी
प्रभाकर नाथ द्विवेदी, श्री	प्रतापगढ़
प्रभु नारायण सिंह, श्री	जौनपुर
प्रमोद कुमार, श्री	प्रतापगढ़
प्रवीन कुमार शर्मा, श्री	बुलन्दशहर
प्रियदर्शी जेतली, श्री	फैजाबाद
प्रेमवती, श्रीमती	बदायूं
प्रेमवती तिवारी, श्रीमती	लखनऊ
फखरे आलम, श्री	बदायूं
फिरंगी प्रसाद विशारद, श्री	गोरखपुर

बंशीधर राज, श्री — खीरी
बनवारी राम, श्री — वाराणसी
बलराम सिंह यादव, श्री — इटावा
बलवीर सिंह, श्री — फर्रुखाबाद
बलवीर सिंह, श्री — रामपुर
वल्देव सिंह आर्य, श्री — उत्तर काशी
बाबू राम, श्री — पीलीभीत
बाबू लाल, श्री — गोंडा
बाबू लाल, श्री — हमीरपुर
बाबू सिंह, श्री — अलीगढ़
बिहारी लाल, श्री — नैनीताल
बिहारी लाल दोहरे, श्री — फर्रुखाबाद
बुद्ध पाल सिंह, श्री — बुलन्दशहर
बृज किशोर मिश्र, डा0 — देवरिया
बैजनाथ कुरील, श्री — लखनऊ
बैजनाथ प्रसाद कुशवाहा, श्री — इलाहाबाद
भगवती सिंह विशारद, श्री — उन्नाव
भगवानदीन कुशवाहा, श्री — कानपुर
भागीरथ, श्री — झांसी
भानु प्रताप सिंह, श्री — बरेली
भास्कर पाण्डेय, श्री — देवरिया
भीखा लाल, श्री — उन्नाव
भूधर नारायण मिश्रा, श्री — कानपुर
भूपसिंह केन, श्री — गाजियाबाद
भृगुनाथ चतुर्वेदी, श्री — गोरखपुर
भोला पाण्डेय, श्री — बलिया
मंगलदेव, श्री — गोंडा
मण्डलेश्वर सिंह, श्री — आगरा
मथुरा प्रसाद पाण्डेय, श्री — बस्ती
मन्जूर अहमद, श्री — मेरठ
मलिक मुहम्मद कमाल यूसुफ, श्री — बस्ती
मसरूर जाफरी, श्री (उर्फ शबगेज) — गोंडा
महाबीर सिंह, श्री — सहारनपुर
महाराज सिंह, श्री — आगरा
महारानी दोहरे, श्रीमती — इटावा
महेश उपाध्याय, श्री — आगरा
महेश चन्द्र, श्री — मेरठ
महेश प्रसाद, श्री — देवरिया
माण्डवी प्रसाद सिंह, श्री — वाराणसी
माता प्रसाद पाण्डेय, श्री — बस्ती
मानपाल सिंह एडवोकेट, श्री — एटा
मान बहादुर, श्री — गोंडा
मारकण्डेय चन्द, श्री — गोरखपुर
मित्रसेन, श्री — फैजाबाद
मुईद अहमद, श्री — सुल्तानपुर
मुख्तार अनीस, श्री — सीतापुर

मुन्शी लाल, श्री — मैनपुरी
मुरलीधर मुनीम, श्री — गोंडा
मुहम्मद आजम खां, श्री — रामपुर
मेंहदी असगर, श्री — मुजफ्फरनगर
मोती लाल देहलवी, श्री — कानपुर
मोहन लाल, श्री — हमीरपुर
मोहन सिंह, श्री — देवरिया
मोहम्मद अबरार अहमद, श्री — बदायूं
मोहम्मद उमर, डाक्टर — गोंडा
मोहम्मद नबी, श्री — बस्ती
मोहम्मद रफी सिद्दीकी, श्री — लखनऊ
मोहम्मद सफीउर्रहमान अन्सारी, श्री — वाराणसी
यदुनाथ सिंह, श्री — मिर्जापुर
यशपाल सिंह, श्री — बुलन्दशहर
यशपाल सिंह, श्री — सहारनपुर
योगेन्द्र सिंह, कुंवर, श्री — फर्रुखाबाद
योगेश चन्द्र, श्री — वाराणसी
रईसउद्दीन वारसी, श्री — मुरादाबाद
रघुराज प्रसाद उपाध्याय, श्री — गोंडा
रघुबीर सिंह यादव, श्री — मैनपुरी
रणजीत सिंह जूदेव, श्री — झांसी
रमाकान्त मिश्रा, श्री — इलाहाबाद
रमेश चन्द्र शुक्ल, श्री — रायबरेली
रवीन्द्र, श्री — आजमगढ़
राज किशोर राव, श्री — बहराइच
राज कुमार राय, श्री — आजमगढ़
राजपति देवी, श्रीमती — सुल्तानपुर
राजपाल सिंह, श्री — मुरादाबाद
राजमंगल पाण्डेय, श्री — देवरिया
राजेन्द्र कुमार गुप्त, श्री — सीतापुर
राजेन्द्र त्रिपाठी, श्री — इलाहाबाद
राजेन्द्र सिंह, श्री — अलीगढ़
राजेन्द्र सिंह, श्री — एटा
राजेन्द्र सिंह यादव, श्री — फर्रुखाबाद
राधेश्याम पटेल, श्री — इलाहाबाद
राधेश्याम वर्मा, श्री — फर्रुखाबाद
राम अवध प्रसाद, श्री — बस्ती
राम आसरे पासवान, श्री — बस्ती
राम आसरे वर्मा, श्री — हरदोई
राम औतार दीक्षित, श्री — हरदोई
राम करन, श्री — वाराणसी
राम कुंवर सिंह, श्री — आजमगढ़
राम कुमार भार्गव, श्री — सीतापुर
राम कृष्ण उपाध्याय, डा0 — जौनपुर
राम कृष्ण माहेश्वरी, श्री — मुरादाबाद
राम गोविन्द, श्री — बलिया

राम चन्द्र, श्री	वाराणसी
राम चरण सिंह, श्री	मिर्जापुर
राम जनम सिंह, श्री	वाराणसी
रामजी राम, श्री	फैजाबाद
राम धनी, श्री	गाजीपुर
राम नरायन, एडवोकेट, श्री	गाजीपुर
रामपाल सिंह, श्री	मुरादाबाद
राम प्यारे पाण्डेय, श्री	फतेहपुर
राम प्रसाद, श्री	जालौन
राम प्रसाद, श्री	मुजफ्फरनगर
राम भजन लाल, श्री	खीरी
राम यश सिंह, श्री	सहारनपुर
राम रतन सिंह, श्री	सीतापुर
राम लाल, श्री	सीतापुर
राम लाल वर्मा, श्री	हरदोई
राम शिरोमणि, श्री	जौनपुर
राम सागर, श्री	बाराबंकी
राम सिंह, श्री	सहारनपुर
राम सिंह, श्री	सुल्तानपुर
राम सिंह शक्या, श्री	बरेली
राम सिंह यादव, श्री	एटा
राम सेवक, श्री	सुल्तानपुर
राम स्वरूप सिंह, श्री	सहारनपुर
राम स्वरूप वर्मा, श्री	कानपुर
राम हर्ष मिश्र, श्री	बहराइच
राम हर्ष राय, श्री	गाजीपुर
रामेश्वर नाथ चौबे, श्री	बरेली
रामेश्वर प्रसाद, श्री	बांदा
रिजवानुर्रहमान किदवाई, श्री	बाराबंकी
रुद्र प्रताप सिंह, श्री	देवरिया
रूप राम, श्री	शाहजहांपुर
रूल्हा सिंह, श्री	सहारनपुर
रेवती रमण सिंह, (उर्फ मणि जी)	इलाहाबाद
लल्लू सिंह चौहान, श्री	मैनपुरी
लाल प्रताप सिंह, श्री	प्रतापगढ़
लालसा, श्री	आजमगढ़
लोकमणि शर्मा, श्री	मथुरा
वासुदेव सिंह, श्री	प्रतापगढ़
विजय कुमार, श्री	लखनऊ
विजय पाल सिंह, श्री	गाजियाबाद
विजय प्रकाश, श्री	इलाहाबाद
विजय सिंह, श्री	मिर्जापुर
विजय सिंह राना, श्री	आगरा
विद्या सागर नौटियाल, श्री	टिहरी गढ़वाल

विनोद कुमार तिवारी, डा0	पीलीभीत
विमल प्रसाद तिवारी, श्री	फर्रुखाबाद
विमला राकेश, श्रीमती	सहारनपुर
विशन लाल, श्री	बिजनौर
विश्राम दास, श्री	इलाहाबाद
विष्णु दयाल वर्मा, श्री	मैनपुरी
वीर बहादुर सिंह, श्री	गोरखपुर
वीरेन्द्र कुमार चौधरी, श्री	सीतापुर
वीरेन्द्र प्रताप शाही, श्री	गोरखपुर
वीरेन्द्र सिंह, श्री	मुजफ्फरनगर
वीरेन्द्र सिंह ढाना, कुंवर,	गाजियाबाद
शशिभ नारायन सिंह, श्री	वाराणसी
शंकर सिंह, श्री	जालौन
शम्भूनाथ, श्री	आजमगढ़
शरीयतुल्ला, श्री	मुरादाबाद
शिरोमणि, श्री	बांदा
शिव दर्शन, श्री	रायबरेली
शिव नरेश, श्री	बांदा
शिवपाल सिंह, श्री	उन्नाव
शिव बालक, श्री	रायबरेली
शिवसंपत सिंह, श्री	मैनपुरी
शिवराज सिंह, श्री	अलीगढ़
शेर बहादुर, श्री	फैजाबाद
शैलेन्द्र सिंह, श्री	बिजनौर
श्याम नरायन तिवारी, श्री	गोरखपुर
श्याम लाल बाजपेयी, श्री	बाराबंकी
श्याम सिंह, श्री	बिजनौर
श्याम सरन उपाध्याय, श्री	इलाहाबाद
श्रीनाथ सिंह, श्री	वाराणसी
श्रीपति मिश्र, श्री	सुल्तानपुर
संकठा प्रसाद शास्त्री, श्री	वाराणसी
सईदुल हसन, श्री	बुलन्दशहर
सच्चिदानन्द, श्री	उन्नाव
सतीश चन्द्र जायसवाल, श्री	इलाहाबाद
सत्यपाल सिंह, श्री	शाहजहांपुर
सन्त बक्स रावत, श्री	लखनऊ
संतोष कुमारी, श्रीमती	बदायूं
सरज प्रसाद 'सरोज', श्री	प्रतापगढ़
सरदार सिंह, श्री	मथुरा
साहब सिंह, श्री	गाजीपुर
सिकन्दर अली खां नवाब, श्री	शाहजहांपुर
सीताराम निषाद, श्री	फैजाबाद
सुखदा मिश्रा, श्रीमती	इटावा
सुखबीर सिंह गुर्जर, श्री	गाजियाबाद
सुधीर सिंह, श्री	देवरिया

सुजान सिंह बुन्देला, श्री	ललितपुर	हंस राज सिंह वर्मा, श्री	एटा
सुनीता चौहान, श्रीमती	रायबरेली	हर गोविन्द वर्मा, श्री	सीतापुर
सुन्दर सिंह, श्री	बहराइच	हरदेव, श्री	बलिया
सुरेन्द्र कपिल, श्री	सहारनपुर	हरदेश प्रसाद पाण्डेय, श्री	बांदा
सुरेन्द्र प्रताप नारायण, श्री	बस्ती	हरिद्वार पाण्डेय, श्री	गोरखपुर
सुरेन्द्र सिंह चौहान, श्री	अलीगढ़	हरि प्रसाद कुरील, श्री	उन्नाव
सुल्तान सिंह, श्री	मुरादाबाद	हरिवंश सहाय, श्री	देवरिया
सूबेदार सिंह, श्री	मैनपुरी	हरि सिंह, श्री	बुलन्दशहर
सूर्यनाथ उपाध्याय, श्री	जौनपुर	हरी किशन श्रीवास्तव, श्री	कानपुर
सैय्यद जकीउद्दीन, श्री	मेरठ	हरीशंकर, श्री	हरदोई
सोमांश प्रकाश, श्री	मुजफ्फरनगर	हाफिज मोहम्मद सिद्दीकी, श्री	मुरादाबाद
स्वामी नेमपाल, श्री	बुलन्दशहर	हुकम सिंह, श्री	मुजफ्फरनगर
स्वामी प्रसाद सिंह, श्री	हमीरपुर	हेमचन्द निमेष, श्री	मेरठ

उत्तर प्रदेश विधान सभा के उपाध्यक्ष, श्री यादवेन्द्र सिंह के निधन पर शोकोद्गार

*मुख्य मंत्री (श्री श्रीपति मिश्र)–

माननीय अध्यक्ष जी, आपकी आज्ञा से मैं सम्मानित सदन के समक्ष एक अत्यन्त शोक का संदेश रखना चाहता हूं । माननीय अध्यक्ष जी, आप पूर्णतः अवगत हैं कि हमारे इस माननीय सदन के उपाध्यक्ष श्री यादवेन्द्र सिंह जी का देहान्त 14/15 दिसम्बर, 1982 की रात्रि को साढ़े ग्यारह बजे गांधी मेमोरियल अस्पताल (मेडिकल कालेज, लखनऊ) में हो गया। उनकी अवस्था 53 वर्ष की थी। इस सदन में उनके सम्बन्ध में मा0 सदस्यों को कुछ कहना, उनकी योग्यता के बारे में कुछ बखान करना तथा उनके व्यवहार के संबंध में कुछ बताना, मेरे लिए उचित और संभव न होगा। आप सभी उनसे विधिवत् परिचित हैं। हमारे सहयोगी के रूप में, विधायक के रूप में, उपाध्यक्ष के रूप में उन्होंने कार्य किया था। वह एक ऐसे परिवार में पैदा हुए थे जो राजघराना था। सम्पत्तिवान और राजसी घराने में पैदा होने के बावजूद भी उनकी मनोवृत्ति, उनका व्यवहार, उनकी सद्भावनाएं आम आदमी और गरीब आदमी के साथ जिस तरह से जुड़ी हुयीं थीं वह साफ-साफ, प्रत्यक्ष रूप से भी दृष्टिगोचर होता था । आज इस वर्तमान परिपेक्ष्य में जब तरह-तरह की अन्य बातें सर उठा रही हैं, वह अपने क्षेत्र से, जहां से वह चुनकर आते थे, उस क्षेत्र में क्षत्रियों की वोटिंग स्ट्रेन्गथ मुश्किल से 400 रही होगी।

पिछली बार कांग्रेस, जिसके दल से खड़े हुए लोगों में आज आप देख रहे हैं कि कितनी तादाद में लोग जीतकर आये मगर इस दल के विरोध में खड़े होकर अत्यधिक मत से जीतकर वे आये। यह स्पष्ट रूप से उनके जनमानस में बैठे होने और जन मानस में प्रतिष्ठित होने का परिचायक है। इधर डेढ़ वर्ष से कोई दिन मेरा ऐसा नहीं गया है जबकि हमारा उनका साथ न रहा हो। अक्सर राजनीति और व्यक्तिगत समस्याओं पर उनसे बात भी होती रही है। जिन समस्याओं के सम्बन्ध में मैं घर से सोच विचार करके आता था कि बड़ी कठिन समस्या है कैसे हल निकलेगा? तो वह कैसी आसानी से कैसी सहृदयता से बहुत सहज भाव से हल निकालने का प्रयास करते थे और अधिकांशतः कोई न कोई रास्ता निकलता था। यह उनके ज्ञान, दुनियादारी और जानकारी का परिचायक है। मान्यवर, आपको भी स्वयं इसका अनुभव होगा कि वह किस तरह से पक्ष और विपक्ष को अनुशासन में रखते हुए, दोनों को

---

*वक्ता ने भाषण का पुनरीक्षण नहीं किया।

[श्री श्रीपति मिश्र–]

प्रसन्न रखते हुए नियमों के अनुसार हमेशा कार्य करते रहे। एक विशेष प्रसन्नता की बात माननीय, यह भी है कि उनके भाई भी हमारे इस सदन के सदस्य रहे और यह भी प्रसन्नता की बात है कि मंत्रिमण्डल में राज्यमंत्री के रूप में एवं राजस्व मंत्री के रूप में भी कार्य इन्होंने किये तथा अन्य विभागों के कार्य को भी देखा और जो भी मीटिंग्स व गोष्ठियां होतीं, उसमें भी पूर्णरूप से बराबर भाग लेते रहे। ऐसे एक साथी, एक दोस्त, एक राजनीतिक और सामाजिक कार्यकर्ता का निधन निश्चित ही इस प्रदेश के लिए दुखकारी घटना है। विशेष कर जब वे ऐसी परिपक्व अवस्था में आए थे कि वे हमारे बीच रहकर हम सभी लोगों की व प्रदेश की अगुवायी व मार्ग-दर्शन कर सकते थे, इस बीच उनका न होना, अत्यन्त दुखदाई बात है। मैं उनके दुखी परिवार के प्रति अपनी ओर से अपने दल व अपने सभी साथियों की तरफ से सहानुभूति, सम्वेदना प्रकट करता हूं और दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और उनके परिवार वालों के दुःख के साथ पूर्णरूप से अपने को सम्बद्ध करता हूं और किसी हदतक उनके परिवार वालों से भी अधिक, क्योंकि जहां वह अपने परिवार वालों के लिए लाभकारी थे उससे कहीं अधिक हम सबके लिए व प्रदेश के लिए सामाजिक व राजनैतिक तथा हर तरह से लाभकारी थे।

श्री राजेन्द्र सिंह–

अध्यक्ष महोदय, माननीय श्री यादवेन्द्र सिंह जी के निधन पर नेता सदन ने जो सम्वेदना व अपने भाव व्यक्त किये हैं हम और हमारा दल उससे अपने को सम्बद्ध करता है। श्रीमन्, पहले हमारा परिचय उनसे बहुत थोड़ा था, लेकिन पहली बार उनका हमसे परिचय तब हुआ जब वह उपाध्यक्ष के चुनाव पर थे। हमारे दल में से भी इस पद के लिए एक प्रत्याशी खड़ा था, जिससे हमारे और उनके बीच कुछ गलतफहमियां थीं, लेकिन जब हमारी उनसे बात-चीत हुई तो हमारी तमाम गलतफहमियां दूर हुईं और वे सर्वसम्मति से इस पद के लिए चुन लिए गए। श्रीमन्, आज हम एक अमूल्य निधि जो इस सदन की थी, उनके बारे में सम्वेदना व्यक्त कर रहे हैं। उन्होंने अपने कुशल व्यवहार से जो सदन का संचालन किया, वह बड़ा हृदयग्राही था। इस बीच कितनी ही कठिनाइयां और विषम परिस्थितियां आयीं, लेकिन उन्होंने बड़ी ही कुशलता और शान्तिपूर्ण ढंग से कोई न कोई ऐसा वाक्य कह कर इस पर सदन को हंसाया है और उस पर भी इस सदन की मर्यादा बनाए रक्खी है। श्रीमन्, जब भी वह इस कुर्सी पर होते थे, हम लोगों को सदैव गाइड करते रहते रहे और यह कहा करते थे कि सदन में अच्छे व्यक्तियों को आना चाहिए और सदन में तैयारी करके आना चाहिए और जनता की बातों को बहुत अच्छी तरह पटअप करना चाहिए, इसके निर्देश करते रहते थे। यहीं नहीं मैंने देखा कि जब भी इस पीठ पर बैठते थे, जनता के बारे में प्रश्न आते थे, किसान के बारे में प्रश्न आते थे तो क्योंकि पीठ की मर्यादा भी रखनी थी, स्वयं कुछ कह नहीं सकते थे, लेकिन फिर भी कोई न कोई बात अपनी कह देते थे, जिससे इस सदन के मा0 सदस्यों को गाइडेंस मिलती थी कि इस बात को भी सत्ता पक्ष के संज्ञान में लाना है। गन्ना किसानों के प्रति वे काफी चिन्तित थे। रेवेन्यू के बारे में, माननीय राजस्व मंत्री जी को याद होगा कि जब चकबन्दी के ऊपर मैं बोल रहा था तो कुछ विषय ऐसे थे, जिसमें वे दिल-चस्पी रखते थे, उन्होंने मुझ से कहा कि इसको रिपीट कीजिए मेरी समझ में नहीं आया। उनकी समझ में तो आ रहा था लेकिन शायद सत्ता पक्ष की समझ में नहीं आ रहा था इसीलिए उन्होंने कहा कि इसको रिपीट कीजिए। उन्होंने विपक्ष को अपनी बात कहने की सारी सुविधाएं दीं। नियमों के वे कड़े थे। उस पीठ पर बैठकर किसी को कोई गलत कार्य करने के लिए कभी भी उन्होंने क्षमा नहीं किया चाहे वह पक्ष ही क्यों न रहा हो? कई बार तो ऐसी चीजें आयीं कि मा0 उपाध्यक्ष

का व्यवहार उस समय के अध्यक्ष से भी ज्यादा सख्त रहता था लेकिन उस पीठ से जो भी निर्देश हुए, उनका पालन करना हमारा कर्तव्य था और हमने किया।

शिक्षा के बारे में उनकी बहुत बड़ी दिलचस्पी थी। उन्होंने विदेशों में पार्लियामेन्टरी कान्फ्रेंस में भी हिस्सा लिया। इतने अच्छे साथी, वक्ता और पार्लियामेन्टेरियन के अपने बीच से बिछुड़ जाने को, जिसने उस पीठ पर बैठकर भी प्रदेश की प्रगति में सहायता की, हम अपना दुर्भाग्य समझते हैं। इन शब्दों के साथ ही मेरे और मेरे दल की सम्वेदनाओं को उनके शोक सन्तप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें। मैं उनके निधन पर अपने और अपने दल की तरफ से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री हरी किशन श्रीवास्तव–मान्यवर, माननीय नेता, सदन और माननीय नेता विरोधी दल ने माननीय श्री यादवेन्द्र सिंह जी के निधन पर जो सम्वेदना के विचार व्यक्त किये हैं, मैं अपने और अपने दल को उनसे सम्बद्ध करता हूं।

स्वर्गीय यादवेन्द्र सिंह जी, जिन्हें अधिकांश क्षेत्र और प्रदेश लल्लन जी के नाम से याद करता हैं और करता रहेगा, वे सही मायने में इस प्रदेश के सर्वाधिक लोकप्रिय साथी के रूप में थे। उनके बारे में मेरी जानकारी आज लगभग 20 वर्षों से है और मैंने उनमें एक ही गुण देखा कि कभी भी वे अपने विरोधी से भी कुछ रोष में या कटु शब्दों में नहीं बोले और लोग यह कहा करते थे कि लल्लन जी से कोई बात भी यदि कही जायगी तो वे इस तरह का उत्तर देंगे कि हमें अपना गुस्सा ठण्डा करना पड़ेगा और यही कारण था कि गोरखपुर कमिश्नरी से एक क्षेत्र से विधायक चुनने के बावजूद भी इनको गांव-गांव का आदमी जानता था। उन जैसा व्यवहार और आचरण साधारणतया सभी व्यक्तियों में नहीं मिल सकेगा क्योंकि मैं इसे ईश्वरीय देन मानता हूं। जो गुण उनमें था। हम सभी लोगों ने भी उपाध्यक्ष के रूप में उनका व्यवहार और आचरण अच्छी तरह देखा और जिस तरह से वे सदन का संचालन करते थे, वह व्यवहार भी हम सम्भवतः आसानी से न पा सकेंगे। विपक्ष की ओर से जब कभी भी उनके सम्मुख जनता की भावनाओं को लेकर प्रश्न उठाए गए तो उन्होंने निश्चित रूप से नियमों के अन्तर्गत रहते हुए हम लोगों की सहायता की। हम जानते हैं कि सभी लोग इससे परिचित हैं कि जब कभी प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट रूप से किसी माननीय मंत्री के द्वारा नहीं आए तो उन्होंने इस बात का संकोच नहीं किया और माननीय मंत्री जी से निवेदन किया कि आप इसका उत्तर स्पष्ट रूप से नहीं दे पा रहे हैं। इस प्रकार से कुशलतापूर्वक सदन का संचालन करने के कारण यह सदन अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन बड़ी सुगमता से करता रहा। मैं ऐसा समझता हूं कि आज जब हमारे बीच से वे चले गए तो इस प्रदेश ने एक बड़ा कुशल नेता, सामाजिक व राजनैतिक-कार्यकर्ता खो दिया है जिसकी क्षति की पूर्ति आसानी से नहीं हो सकेगी। मैं आपसे निवेदन करूंगा कि मेरी भावनाओं को, मेरे दल की भावनाओं को आप उनके शोक-संतप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

*श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त–

माननीय अध्यक्ष जी, अभी इस आदरणीय सदन के माननीय उपाध्यक्ष, श्री यादवेन्द्र सिंह जी के निधन के संबंध में जो उद्गार नेता सदन, नेता विरोधी दल तथा नेता लोकतांत्रिक समाजवादी दल ने व्यक्त किये हैं उनमें से मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। मान्यवर, यहां जो आता है, वह चला भी जाता है परन्तु श्री सिंह ने अपने पीछे जो छाप छोड़ी है एक उपाध्यक्ष की हैसियत से सदन के संचालन की उससे मान्यवर, वे सदा याद किए जाते रहेंगे। वह बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनकी अपने क्षेत्र में इतनी लोकप्रियता उनके संबंध में दर्शाती है कि वे एक विशिष्ट

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[*श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त]–

व्यक्तित्व वाले व्यक्ति थे । ऐसे ही शिक्षा के क्षेत्र में हैं इन सब बातों के होते हुए सबसे बड़ी बात यह है कि वे एक अच्छे इंसान थे ।

मुझे याद है कि एक बार इसी सदन में जब वे यहां पीठ पर आसीन थे, मैं किसी बात से आवेश में आ गया, हालांकि वह आवेश में मुझे नहीं आना चाहिए था, लेकिन आदमी अनेक दोषों का शिकार है । तो जब वे कमरे में गए तो मैं उसी आवेश में उनके कमरे में अपनी बात कहने के लिए पहुंचा और अपनी बात कहना ही चाहता था कि उन्होंने मुझे देखते हुए कहा कि भई मुझसे गलती हो गयी । मान्यवर, उनकी इस बात पर मुझे अपने पर इतना पश्चाताप हुआ कि यदि वे मुझे बात समझाने की चेष्टा करते या कुछ शब्द कहते तो इतना पश्चाताप मुझे न होता जितना कि उनकी उस बात से मुझे हुआ कि मैं क्यों नहीं अपने आवेश को रोक सका । उनके इस संतुलित व्यवहार से मैं बहुत प्रभावित हुआ । इन शब्दों के साथ जो महान् विभूति हमारे बीच से चली गयी है उनके प्रति मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह हमें इतनी ताकत दे कि उनके गुणों को हम अपने अन्दर ले सकें । इन शब्दो के साथ मैं फिर अपनी ओर से और अपने दल की ओर से उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे निवेदन करता हूं कि मेरी व मेरे दल की भावनायें उनके शोक सन्तप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

*श्री **जनार्दन प्रसाद ओझा**–माननीय अध्यक्ष जी, स्वर्गीय यादवेन्द्र सिंह जी के संबंध में माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल और अन्य दलों के नेताओं ने जो भावनाएं व्यक्त की हैं, उनसे मैं अपने को तथा अपने दल को सम्बद्ध करता हूं ।

मान्यवर, स्वर्गीय यादवेन्द्र सिंह जी से मैं करीब पच्चीसों साल से सम्बद्ध रहा हूं। मेरी एडज्वाइनिंग कान्स्टीट्यून्सी से वे आते रहे थे । वह एक जनप्रिय कार्यकर्ता थे । वह एक ऐसे परिवार से आये थे जिसके संबंध में कई भ्रान्तियां थीं लेकिन अपने व्यवहार में, अपनी कर्मठता में, अपनी लगन और कुशलता से वे सबके जन सेवक हो गये थे । वह उसी निर्वाचन क्षेत्र से कई बार जीत कर आये थे । मान्यवर, मैंने उनको नजदीक से देखा था और उनको समझने की कोशिश की थी । जिन समस्याओं को लेकर उनके क्षेत्र मे जाते, निश्चित रूप से वह वापसी में मिल जाते थे और उसके निराकरण में वह अपना सुझाव देते थे । यह जानकर हमको बड़ा आश्चर्य होता था । मान्यवर, सदन के गलियारे में उनका अट्टहास सदैव गूंजता रहेगा और यह सदन उनको सदैव याद करता रहेगा वह हमारे सहयोगी थे, उधर के लोगों के हमदर्द थे और गोरखपुर की जनता के हरदिल अजीज इन्सान थे । उनकी मृत आत्मा के प्रति हम श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं । कृपया हमारी सम्वेदनायें उनके दुःखी परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री भीखा लाल–माननीय अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय श्री यादवेन्द्र सिंह के संबंध में माननीय नेता सदन, नेता विरोधी दल तथा अन्य माननीय नेताओं ने जो अपने-अपने विचार व्यक्त किए उनसे मैं अपने को तथा अपने दल को संबद्ध करता हूं । मान्यवर, लल्लन भाई के प्रति जितना भी कहा जाये वह थोड़ा होगा । मेरा सदन के सदस्य के नाते उनसे काफी परिचय रहा है और जब कभी भी मैं उनसे मिलता था या कभी आमने-सामने मिल जाता था तो हमेशा वह मुझे यह मौका नहीं देते थे कि मैं नमस्कार पहले कर लूं, बल्कि वह ही पहले नमस्कार करते थे और बड़े भाई कहकर सम्बोधित करते थे। मान्यवर, वे एक मृदु भाषी थे और उनका चेहरा हंसमुख था। सदन में जब कभी ऐसा अवसर आता था कि टेन्शन पैदा हो जाता था या सेचूएशन टेन्स हो जाती थी, लेकिन जब वह अध्यक्ष पीठ पर होते थे तो अपनी मृदु वाणी और हंसमुख स्वभाव से एक आध

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

जुमलों से वातावरण ठन्डा कर देते थे। उनको कभी भी उत्तेजना नहीं आती थी। उनके निधन से हमारे प्रदेश को महान क्षति हुई है, लेकिन उनके कामों को यह सदन सदैव याद करता रहेगा। उनका व्यवहार और स्वभाव ऐसा रहा है कि हर व्यक्ति उनकी याद करेगा। इन शब्दों के साथ मैं अपनी तथा अपने दल की ओर से उनके प्रति श्रद्धान्जलि अर्पित करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि मेरी संवेदनायें और यह विचार उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

***श्री सुबेदार सिंह**—माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं कांग्रेस (एस0) की ओर से माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल तथा अन्य दल के माननीय नेताओं ने जो विचार व्यक्त किये हैं उनसे अपने को और अपने दल को उनसे सम्बद्ध करता हूं। मान्यवर, मेरा स्वर्गीय यादवेन्द्र सिंह जी से लम्बे अर्से से साथ रहा है। करीब 20 वर्ष से हम लोग विभिन्न रूपों में उनको जानते हैं, इस सदन के उपाध्यक्ष के रूप में इस प्रदेश के प्रशासन के मंत्री के रूप में और एक मानव के रूप में हमने उनको देखा है। मान्यवर, वह सर्वगुण सम्पन्न थे। उनका अनेकों संस्थाओं से सम्बन्ध था विशेष रूप से शिक्षा जगत के विकास के लिये उन्होंने जो योगदान दिया अपनी विभिन्न प्रकार की परिस्थितियां रही हैं वे इस प्रदेश के लिए इतिहास के रूप में रहेगी। इस पीठ पर बैठकर उन्होंने जो व्यवस्थायें दी हैं वे हमारा मार्गदर्शन करेंगी। वे एक एसे व्यक्ति थे जिसकी पूर्ति होना निकट भविष्य में सम्भव नहीं है। मान्यवर, इस पक्ष के और उस पक्ष के लोग उनके निधन से दुखी हैं। हम आपसे निवेदन करते हैं कि आप हमारी और हमारे दल की ओर से शोक संवेदनायें उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री केदार नाथ सिंह—मान्यवर, अभी माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल तथा अन्य दलों के नेतागण ने श्री यादवेन्द्र सिंह जी के निधन पर जो उद्गार व्यक्त किये हैं, जो संवेदनायें व्यक्त की हैं उनसे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि आप हमारी शोक संवेदनायें उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें। मान्यवर, उनके निधन से प्रदेश और देश की जो क्षति हुई है वह अपनी जगह पर है लेकिन मैं जिस जिले का रहने वाला हूं, जिस कमिश्नरी का रहने वाला हूं उसकी तो एक अपूर्णनीय क्षति हुई है वह हमारे लिए सहन करने योग्य नहीं है। इस सदन में बैठकर उन्होंने नियमों का जिस कड़ाई के साथ पालन किया और इस पीठ से इस सदन को जिस तरह से हंसमुख बनाकर रखा, जिस तरह से उन्होंने यहां जो मानसिक तनाव पैदा हो जाता था उसे दूर करने की उन्होंने चेष्टा की जिससे पूरे सदन का वातावरण प्रफुल्लित हो जाता था इस प्रकार सम्मिश्रण मिलना दुर्लभ है।

मान्यवर, मैं उनके निधन की वेदना से, उनकी बातों को स्मरण करके अपने उद्गार व्यक्त नहीं कर पा रहा हूं। मैंने कई एसे अवसर देखे हैं जब हम लोग क्रोधित होकर कई समस्याओं को लेकर उनके पास जाते थे तो एसा लगता था कि उनके लिए वह समस्याएं बहुत मामूली बातें हैं। उनसे बातें करने के बाद हम अपने दिल में बहुत हलकापन महसूस करते थे। उनमें सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि जब किसी बात पर या किसी भी गल्ती पर हम उनका ध्यान आकर्षित करते थे तो उन्हें वह गल्ती स्वीकार करने में एक मिनट के लिए भी संकोच नहीं होता था। सन् 67 में जब हम कांग्रेस में थे तो टिकट मांगने के लिये दिल्ली गये थे। वातावरण तनावपूर्ण था। उस समय भी कांग्रेस के लोग भीतर-भीतर दो गुटों में काम कर रहे थे लेकिन उनके पास वे दोनों गुटों के लोग उस तनाव की स्थिति में आते थे और दलबन्दी होते हुए भी, तनाव की स्थिति होते हुए भी खूबी के साथ उन्होंने समस्याओं को सुलझाने की चेष्टा की।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री केदार नाथ सिंह]

मान्यवर, बहुत सी बातें हैं, जिनको याद करके हम लोगों का दिल भर आता है। उनके निधन से हम लोग व्याकुल हैं। उनकी बहुत सी बातें स्मरण योग्य हैं लेकिन इस समय उनका उल्लेख करना ज्यादा उपयुक्त नहीं होगा। मान्यवर, अन्त में मैं आपसे पुनः अनुरोध करूंगा कि आप हमारी और हमारे दल की शोक संवेदनायें उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

*श्री जसवंत सिंह विष्ट–माननीय अध्यक्ष जी, नेता सदन, नेता विरोधी दल तथा अन्य नेताओं ने जो माननीय यादवेन्द्र सिंह जी के प्रति उद्गार प्रकट किये और संवेदना व्यक्त की मैं उससे अपने को संबद्ध करता हूं। मान्यवर, मेरा सबसे पहले उनके माननीय बन्धु सिंह आर्य जी ने परिचय कराया और कहा विष्ट जी बहुत बोलना चाहते हैं आप इनके उपाध्यक्ष पद के लिए प्रस्तावक बन जाइये। जब यादवेन्द्र सिंह जी उपाध्यक्ष बन जायेंगे तो आपको खूब समय देंगे और मैं उनका प्रस्तावक बन गया। आप लोगों के सहयोग से वे इस सदन के उपाध्यक्ष निर्विरोध निर्वाचित हुए। इस बीच कई बार उनके साथ मेरी खटपट भी हो गई। मैं यह सोचता था कि मैं उनका प्रथम प्रस्तावक बना और ये मुझे समय नहीं देते हैं। उन्होंने मुझे बताया कि विष्ट जी एक आप ही नहीं बोलना चाहते हैं बल्कि 425 विधायक हैं जो बोलना चाहते हैं तो उसी हिसाब से समय दिया जाता है। आप जानते हैं कि पर्वतीय क्षेत्र की समस्याओं को लेकर जब मैं उठता था बोलने के लिए तो वह कहते थे कि विष्ट जी आप बैठ जाइये आप क्यों खड़े हुए जब मैं नहीं बैठता था तो कहते थे आपको समय नहीं दिया गया है। जब मैं बैठ जाता था तो कहते थे विष्ट जी उठिये। तो वह चित्र जब मैंने अखबार में या रेडियो में उनके बारे में सुना सामने नजर आता है "विष्ट जी आप बैठ जाइये और अब आप उठ जाइये।" तो मान्यवर, उनके साथ जो लगाव रहा और चाहता था कि उनसे कुछ सीखूं लेकिन नहीं सीख पाया। अब हम उनको इस सदन में नहीं देख पायेंगे यह हमको आज खल रहा है। तो मेरी ओर से यह संवेदना उनके परिवार तक आप पहुंचा दें।

श्री अध्यक्ष–श्री यादवेन्द्र सिंह के प्रति जो संवेदना माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल तथा अन्य दलों के नेताओं ने व्यक्त किया है मैं भी अपने को उससे सम्बद्ध करता हूं। जहां तक यादवेन्द्र सिंह जी का संबंध है जैसा कि माननीय नेताओं ने बताया कि उनको लोग लल्लन जी के नाम से जानते थे। उनके साथ मेरा परिचय उस वक्त से है जब वे यहां पर 1962 में चुनाव लड़ कर आये थे और इस सदन में बैठते थे। उनकी मृत्यु उस समय हो गयी जब वे 53 वर्ष के थे किन्तु उनको बहुत दिनों तक जीवित रहना चाहिए था। जब भी मैं उनसे मिलता था तो वे मुझसे कहा करते थे कि मेरे कुटुम्ब में एक दुखद बात यह रही है कि मैं ही एक ऐसा व्यक्ति हूं जो इतने साल तक जीवित हूं मेरे से कम उम्र के लोग जो मेरे से छोटे थे उनकी मृत्यु हो गयी है। मैं उनको समझाया करता था कि मान्यवर, इस तरह की बात नहीं है आप बहुत दिनों तक जीवित रहेंगे। लेकिन उनके मस्तिष्क पर इस तरह की विचारधारा छा गयी थी कि मैं बहुत दिनों तक क्यों जीवित रहूं? उन्होंने बी0ए0, एल0एल0बी0 किया, डी0 पी0 ए0 किया और उसके बाद 62, 67, 69 और 74 तक इस सदन के माननीय सदस्य रहे। उसके बाद 1980 में जब वह चुनकर आये, तो यहां पर उपाध्यक्ष बनाये गये। इसके साथ-साथ माननीय बहुगुणा जी की गवर्नमेंट में और श्री कमलापति त्रिपाठी जी की गवर्नमेंट में उन्होंने स्टेट मिनिस्टर के रूप में अपना कार्य किया। वह विदेश यात्रा और विद्या के क्षेत्र में विशेष दिलचस्पी लेते थे। जब लोग आपस में मिलते थे और राजनीतिक दृष्टि से यहां पर लड़ाई हुआ करती थी, तो ऐसे समय में वह जैसे मस्तहाथी होता है, उसी तरह की विचारधारा लेकर वह काम किया करते थे। दूसरे तमाम मुल्कों में

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

भी वह गये, बीजिंग भी गये और अन्य बहुत से स्थानों पर गये। जाने से पहले जबकि पार्लियामेन्ट्री कान्फ्रेंस हो रही थी, तो मैं उनको छोड़ने के लिये गया हुआ था और उस समय उन्होंने अपनी चेकिंग आदि करायी थी। वहां से लौटने के बाद जब मैं उनसे यू0 पी0 निवास में मिला, तो बहुत ही उनका आकर्षण था।

उसके बाद प्रसाइडिंग आफिसर्स कान्फ्रेंस पटना में हुई थी, लेकिन उनके साथ एक दिक्कत हुआ करती थी, जहां तक खाने-पीने इत्यादि का सम्बन्ध है। मैं उनको बहुत रोका करता था, क्योंकि हम साथ-साथ रहते थे—वह अपनी प्लेट ले लेते थे और छीन कर प्लेट ले लेते थे, हम लोग उनको उसके लिये बहुत रोका करते थे। यह उनके साथ बहुत बड़ी दिक्कत थी। उनका निधन तो हो गया, लेकिन उनका यश, राजनीतिक जीवन, आकर्षक व्यक्तित्व और सार्वजनिक सेवाभाव इस सदन में कदापि नहीं भुलाया जा सकता है। पिछले समय जब मैं यहां अध्यक्ष बना, हालांकि बहुत थोड़े दिन असेम्बली चली थी, फिर भी जब-जब कोई कठिनाई की इस तरह की बात होती थी तो हम उनसे बराबर सलाह करते थे।

उनकी उम्र ज्यादा नहीं थी, इसके लिये और भी यह दुखदायी है इस प्रदेश के लिये। जिस व्यक्ति का जीवन इस प्रकार का रहा हो, जो सामन्तशाही घराने में पैदा हुआ हो, और जिसने इस बात को कभी किसी को महसूस न होने दिया हो कि वह एक सामन्तशाही घराने में और ऊंचे घराने में पैदा हुए हैं, उसे हमेशा याद किया जायेगा। वह हमेशा गरीबों और पद दलितों के बीच उनकी सेवा में लगे रहे और एक शानदार आदमी की तरह से वह सेवाभाव का अपना जीवन व्यतीत करते रहे। मुझे मालूम हुआ कि जब उनकी यहां पर मृत्यु हुई और उनका शव गोरखपुर गया, नेता सदन और अन्य नेता वहां गये हुए थे, उनकी मृत्यु का दुखद समाचार सुनकर बहुत बड़ी तादाद में आदमी इस प्रकार आ रहे थे, जब उनका अन्तिम संस्कार किया जा रहा था देवरिया, बस्ती, गोरखपुर और आसपास के जिलों के लोग मानो उनके ही परिवार का कोई व्यक्ति हो। हमने एक बहुत अच्छे व्यक्ति को, एक ऊंचे पार्लियामेन्टेरियन को और एक समाजसेवी को खो दिया है। तो माननीय नेता सदन और नेता विरोधी दल तथा अन्य नेताओं ने जो भाव प्रकट किए हैं, मैं उनके परिवार को इस संवेदना को यहां से भिजवा दूंगा और भगवान से प्रार्थना करता हूं कि भगवान उनकी आत्मा को शान्ति दे। अब हम दो मिनट मौन खड़े होकर श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे।

(सभी सदस्य दो मिनट के लिए अपने-अपने स्थान पर मौन खड़े हुए।)

विधान सभा सदस्य, श्री मलिक मोहम्मद जमीर अहमद खां के निधन पर शोकोद्गार

*मुख्य मंत्री (श्री श्रीपति मिश्र)—

माननीय अध्यक्ष जी, हमारे इस गोरखाली सदन के सदस्य श्री मलिक मोहम्मद जमीर अहमद खां थे जिनका 5 जुलाई, 1982 को, लगभग 52 वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। मलिक मोहम्मद जमीर अहमद खां साहब पटियाली निर्वाचन क्षेत्र जिला एटा से 1974 में प्रथम बार इस सदन के सदस्य चुने गये और पुनः 1980 में इस सदन के सदस्य चुने गये। इसके साथ-साथ वह बहुत दिनों तक प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य रहे और कई अन्य संस्थाओं के सदस्य भी रहे और हर तरह से शिक्षा के संबंध में वह बराबर कार्य करते रहे। जमीर अहमद साहब ने अपने क्षेत्र में शिक्षा के विषय में जो कार्य किया और साथ ही साथ समाज के प्रति जागरूकता रखकर जो सेवा वह करते रहे, उसकी इस कम उम्र में उनके दिवंगत होने से जो हानि हुई है, उसके लिए हम सबको दुःख है। मान्यवर, मैं अपनी तरफ से, अपने दल की तरफ से, अन्य माननीय सदस्यों की तरफ से ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति दे और उनके परिवार को यह दुःख वहन करने की क्षमता दे।

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

श्री राजेन्द्र सिंह–

अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय श्री मलिक मोहम्मद जमीर अहमद खां साहब के निधन पर नेता सदन ने जो संवेदना के भाव व्यक्त किये हैं, मैं और मेरा दल अपने-आपको उससे सम्बद्ध करता है। श्रीमन्, जमीर साहब एटा जनपद से आते थे जो मेरा निकटतम जनपद है। वह एक अच्छे सामाजिक कार्यकर्ता और गरीबों के बीच में कार्य करने वाले हमारे कार्यकर्ता थे। वह दो बार इस माननीय सदन के सदस्य निर्वाचित हुए। कृषि के बारे में उनका बहुत अच्छा ज्ञान था और अच्छी खेती स्वयं भी वह करते थे। श्रीमन्, हमने अपने बीच से एक ऐसे गरीबों के हमदर्द, एक शिक्षा के, कृषि के क्षेत्र में कार्य करने वाले सामाजिक कार्यकर्ता को खोया है। निश्चित तौर पर एटा जनपद को भारी क्षति हुई है, उनके चले जाने से। श्रीमन्, मैं अपनी तरफ से और अपने दल की तरफ से उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और निवेदन करता हूं कि आप हमारी वेदना के भाव को उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री हरी किशन श्रीवास्तव–

माननीय अध्यक्ष जी, नेता सदन और नेता विरोधी दल ने जो उद्गार मलिक मोहम्मद जमीर अहमद खां साहब के बारे में व्यक्त किए हैं, मैं उनकी भावनाओं से अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। निश्चित ही उनके निधन से इस सदन ने एक बहुत बड़ा जन सेवी और अपना सहयोगी खो दिया है और हम ऐसा विश्वास करते हैं कि उनका प्रयास और उनका परिश्रम जो विशेषकर कृषि और शिक्षा के क्षेत्र में रहता था, उसकी कमी का हम एहसास करते रहेंगे। मैं आपसे निवेदन करूंगा कि आप मेरी भावनाओं को और मेरे दल की भावनाओं को उनके संतप्त परिवार तक भेजने की कृपा करें।

*श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त–

माननीय अध्यक्ष जी, अभी स्वर्गीय मलिक मोहम्मद जमीर अहमद खां के बारे में जो उद्गार माननीय नेता सदन, नेता विरोधी दल और नेता लोकतांत्रिक समाजवादी दल ने व्यक्त किये हैं मैं उनसे अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। स्वर्गीय जमीर साहब निःसन्देह अत्यन्त लोकप्रिय सामाजिक कार्यकर्ता थे। जो शिक्षा के क्षेत्र में कार्यशील थे और अच्छी भूमिका निभाते थे। उनके न रहने से एटा जनपद की राजनीतिक और सामाजिक जीवन में जो रिक्तता आयी है भगवान उसको पूरा करने की ताकत दे। इन शब्दों के साथ मैं अपनी तरफ से और अपने दल की तरफ से उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे प्रार्थना करता हूं कि मेरी भावना को उनके परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

*श्री जनार्दन प्रसाद ओझा–

माननीय अध्यक्ष जी, स्वर्गीय जमीर अहमद खां के बारे में जो भाव माननीय नेता सदन, नेता विरोधी दल और दूसरे दल के नेताओं ने व्यक्त किये हैं, उनसे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि मेरी भावना को उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें। मान्यवर, उनके निधन से सार्वजनिक जीवन में जो रिक्तता आयी है वह रिक्तता का क्रम न जाने कहां तक चलेगा। यह विधि की विडम्बना है कि जो व्यक्ति समाज के लिए समर्पित था अपने क्षेत्र में लोगों के लिए समर्पित था जिसने इतनी कम उम्र में शिक्षा के क्षेत्र में बहुत कुछ किया, वह इतनी कम उम्र में चला गया। इससे एटा जनपद के सार्वजनिक जीवन में रिक्तता आयी है। मैं फिर चाहूंगा कि मेरी और मेरे दल की संवेदना और सहानुभूति के शब्द उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनरीक्षण नहीं किया।

श्री भीखा लाल–

माननीय अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय जमीर अहमद साहब के बारे में जो विचार नेता सदन, नेता विरोधी दल और अन्य दलों के नेताओं ने व्यक्त किये हैं मैं उनसे अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। मैं अपने और अपने दल की तरफ से दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि मेरी भावना को उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

*श्री सूबेदार सिंह–

मान्यवर, मोहम्मद जमीर अहमद के निधन पर जो विचार नेता सदन, नेता विरोधी दल और अन्य दलों के नेताओं ने व्यक्त किये हैं, उससे मैं अपने और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। मान्यवर, आज के समय में जब सार्वजनिक जीवन में निरन्तर ह्रास हो रहा है एक अच्छा व्यक्ति हमारे बीच से चला गया यह चिन्ता का विषय है। वह एक सामाजिक व्यक्ति थे। उनके निधन से सामाजिक जीवन में एक रिक्तता आयी है जिसका पूरा होना सम्भव नहीं है। मैं आशा करता हूं कि आप मेरी श्रद्धांजलि उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करेंगे।

श्री केदार नाथ सिंह–

मान्यवर, स्वर्गीय जमीर अहमद खां के निधन के संबंध में जो उद्गार नेता सदन, नेता विरोधी दल और अन्य दलों के नेताओं ने व्यक्त किये हैं मैं उनसे अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं और भगवान से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को शान्ति मिले। मान्यवर, मेरे समय में या मेरे सम्पर्क में स्वर्गीय मलिक साहब नहीं थे लेकिन फिर भी अच्छे लोगों की कीर्तियां दूर-दूर तक फैलती हैं और उनके आधार पर हम महसूस करते हैं कि वह एक जनप्रिय नेता थे और अच्छे सामाजिक कार्यकर्ता थे। मैं अनुरोध करूंगा कि आप मेरी और मेरे दल की संवेदना उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री अध्यक्ष–

माननीय नेता सदन, नेता विरोधी दल और अन्य सम्मानित नेताओं ने जो मलिक साहब के बारे में विचार प्रकट किए हैं और श्रद्धांजलि अर्पित की है, मैं भी अपने को उससे सम्बद्ध करता हूं। जहां तक मैं समझता हूं मलिक साहब इस सदन के दो बार सदस्य रहे। उनकी योग्यता, उनकी परम्परा, उनका इतिहास हम देखें तो पता चलेगा कि राजनीतिक जीवन में वह ज्यादा नहीं रहे लेकिन उनका काम करने का तरीका इस प्रकार का था कि वह गरीबों के लिए काम करते थे। शिक्षा का जहां तक संबंध है, बहुत सारा कार्य उन्होंने किया। उनकी 52 वर्ष की आयु में मृत्यु हो गई। बहुत दिनों तक उनको जीवित रहना था जिससे प्रदेश का हित होता। इन शब्दों के साथ जो माननीय नेताओं ने विचार प्रकट किये हैं मैं उनको उनके परिवार तक प्रेषित कर दूंगा। अब हम दो मिनट के लिए मौन खड़े होकर उनको श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे।

(सभी सदस्य दो मिनट के लिए अपने-अपने स्थान पर मौन खड़े हुए।)

विधान सभा सदस्य, श्री चरनजीत सिंह के निधन पर शोकोद्गार

*मुख्य मंत्री (श्री श्रीपति मिश्र)–

माननीय अध्यक्ष जी, हमारे वर्तमान सदन के सदस्य माननीय चरनजीत सिंह का निधन 17 दिसम्बर, 1982 को लगभग 11 बजे फगवाड़ा से 15 किलोमीटर दूर फगवाड़ा चंडीगढ़ रोड पर जीप और बैलगाड़ी की दुर्घटना के कारण हो गया। वह 54 वर्ष की आयु के थे। माननीय चरनजीत सिंह पहली बार इस विधान सभा के सदस्य हुये थे। इन की शिक्षा पंजाब और तदुपरान्त आक्सफोर्ड में हुई थी। ये पहली बार पीलीभीत निर्वाचन

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री श्रीपति मिश्र–]

क्षेत्र से 1980 में चुन कर आये थे और इन्होंने 1970 में कांग्रेस दल ज्वाइन किया था और तब से विभिन्न पदों पर रहते हुये ग्राम प्रधान के पद से इन्होंने अपना राजनीतिक जीवन शुरू किया। ब्लाक प्रमुख हुये और फिर यहां इस सदन के सदस्य हुये। ये अपने क्षेत्र में अच्छे तरीके से जन सेवा का कार्य सम्पन्न कर रहे थे लेकिन थोड़ी-सी राजनीतिक जीवन के बीच में ही दुर्घटना हो गयी और इनकी मृत्यु हो गयी। इस क्षेत्र के एक मेहनती और अच्छी तरह से जनता के हित में कार्य करने वाले व्यक्ति के निधन से उस क्षेत्र को और प्रदेश को धक्का लगा है। हम सब लोग उनके प्रति अपनी सहानुभूति और श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और मान्यवर, आपके द्वारा उनके परिवार को अपनी सहानुभूति पहुंचाने का अनुरोध करते हैं।

***श्री राजेन्द्र सिंह–**

अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय श्री चरनजीत सिंह के निधन पर माननीय नेता सदन ने जो श्रद्धांजलि के भाव व्यक्त किये हैं मैं और मेरा दल उनसे अपने को सम्बद्ध करता है। श्रीमन् श्री चरनजीत सिंह एक उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद समाज सेवा में आये और उन्होंने इतनी ऊंची शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी अपना जीवन ग्राम प्रधान से शुरू किया। श्रीमन्, हमने एक कर्मठ और निष्ठावान साथी को बहुत शीघ्र ही खो दिया है जिसकी पूर्ति जनपद पीलीभीत में होना थोड़ा मुश्किल है। श्रीमन्, अपने एक ऐसे साथी के प्रति मैं और मेरा दल अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है और आपसे निवेदन करता हूं कि आप हमारी संवेदनायें उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री हरी किशन श्रीवास्तव–

मान्यवर, माननीय नेता सदन, नेता विरोधी दल ने स्वर्गीय चरनजीत सिंह के निधन पर जो उद्गार व्यक्त किये हैं मैं और मेरा दल अपने को सम्बद्ध करता हूं। निश्चित रूप से एक योग्य और कर्मठ व्यक्ति हमारे बीच से उठ गया। पीलीभीत में जो अपने मित्रों से जानकारी मिलती रहती थी उसके अनुसार थोड़े ही समय में चरन जीत सिंह बड़े ही लोकप्रिय व्यक्ति हो गये थे। वहां के लोगों के कथनानुसार उनका सारा समय उस क्षेत्र की सेवा में ही व्यतीत होता था। मैं ऐसा समझता हूं कि अच्छे और कर्मठ, लोकप्रिय समाजसेवी की कड़ी में वह एक कड़ी थे और उनके निधन से हमें बहुत बड़ी क्षति हुई है। मैं आप से निवेदन करूंगा कि मेरी और मेरे दल की भावनायें आप उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

***श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त–**

श्री चरन जीत सिंह के निधन के संबंध में जो उद्गार नेता सदन, नेता विरोधी दल, नेता लोकतांत्रिक समाजवादी दल ने प्रकट किये हैं मैं अपने तथा अपने दल को उससे सम्बद्ध करता हूं। चरन जीत सिंह जी के निधन का समाचार दुखद तो है ही लेकिन जिन परिस्थितियों में और जिस ढंग से वह अकाल काल-कलवित हुए, वह अत्यन्त ही भयावह है। वह पीलीभीत में समाजसेवी थे। इन शब्दों के साथ मैं आप से प्रार्थना करूंगा कि उनके शोक संतप्त परिवार तक हमारी संवेदनायें पहुंचाने का कष्ट करें।

***श्री जनार्दन प्रसाद ओझा–**

स्वर्गीय श्री चरन जीत सिंह के सम्बन्ध में जो भावनायें आदरणीय नेता सदन, नेता विरोधी दल तथा अन्य दलों के नेताओं ने व्यक्त की है, मैं अपने तथा अपने दल को उससे सम्बद्ध करता हूं। सार्वजनिक जीवन में उच्च शिक्षा प्राप्त करके आना और अपने जीवन का प्रारम्भ ग्राम प्रधान के पद से शुरू करना इस बात का परिचायक है कि

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

श्री चरनजीत सिंह अपनी कर्मठता, त्याग और जो उनका मिशन था समाजसेवा का, यह उसका परिचायक था कि वह यहां पर चुन कर आये थे। उनके निधन से बल्कि असामयिक निधन हुआ और जिन दु:खद परिस्थितियों में अपने परिवार से दूर, प्रदेश से दूर, जिले से दूर उनकी मृत्यु हुई है वह बड़ी दु:खद है। मैं आप से निवेदन करूंगा कि आप उनके शोक संतप्त परिवार तक हमारी संवेदनाएं पहुंचाने का कष्ट करें।

श्री भीखा लाल–

श्री चरन जीत सिंह के असामयिक निधन के संबंध में जो विचार नेता सदन, नेता विरोधी दल ने व्यक्त किए हैं मैं अपने तथा अपने दल को उससे सम्बद्ध करता हूं। स्वर्गीय चरनजीत सिंह के मरने से सही है कि उनके जिले को महान क्षति हुई है लेकिन हमने भी एक प्रतिभाशाली समाजसेवी खो दिया है। मैं अपने तथा अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि आप उनके शोक संतप्त परिवार तक हमारी भावनायें पहुंचाने का कष्ट करें।

***श्री सूबेदार सिंह–**

श्री चरन जीत सिंह के आकस्मिक निधन पर जो संवेदनाएं नेता सदन, नेता विरोधी दल तथा अन्य नेताओं ने व्यक्त की हैं, मैं अपने और अपने दल को उससे सम्बद्ध करता हूं। चरन जीत सिंह एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने पीड़ितों की सेवा में अपना सारा समय दिया और काफी परिश्रम करने के बाद शिक्षा जगत में अनेकों संस्थाओं को खड़ा किया। आप हमारे और हमारे दल की ओर से शोक संवेदनायें उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री केदार नाथ सिंह–

माननीय, स्वर्गीय चरनजीत सिंह जी के निधन पर जो संवेदनाएं माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल तथा अन्य दलों के नेताओं ने व्यक्त किये उनके साथ मैं भी अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। माननीय, चरनजीत सिंह जी एक अच्छे जन सेवक और जन प्रिय नेता थे। उनके परिवार तक हमारी व हमारे दल की ओर से शोक संवेदनायें भेजने का कष्ट करें।

श्री अध्यक्ष–

माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल और अन्य दलों के नेताओं ने जो विचार व्यक्त किये हैं, मैं भी अपने को उनसे सम्बद्ध करता हूं। जहां तक चरनजीत सिंह जी का संबंध है, हालांकि वह पहली बार ही इस सदन में आये थे लेकिन जब मैंने उनके कार्य को देखा, उनकी कर्तव्यपरायणता को देखा तो ऐसा मालूम हुआ कि वह दिन प्रतिदिन के कार्य में बड़ी दिलचस्पी लेते हैं। मेरे पास कई बार आते थे। जो वहां के लोगों की, तराई के इलाके की समस्यायें होती थी उनके समाधान के लिये वह बहुत ही प्रयत्नशील रहते थे। जल्दी ही उनकी मृत्यु हो गयी, जल्दी ही वह हम लोगों से बिछड़ गये। उनको बहुत दिनों तक जीवित रहना था, उनकी अच्छी परसनालिटी थी, वह काम में बड़ी दिलचस्पी लेते थे। इन शब्दों के साथ जो माननीय नेताओं ने जो भावनायें प्रकट की हैं मैं उनके परिवार तक भेजवा दूंगा।

अब हम लोग दो मिनट मौन रहकर उनको श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे।

(सभी सदस्य दो मिनट के लिए अपने-अपने स्थान पर मौन खड़े हुए।)

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

भूतपूर्व सदस्य एवं मंत्री, श्री राज बिहारी सिंह, भूतपूर्व विधान परिषद् सदस्य एवं मंत्री, श्री रवीन्द्र किशोर शाही, भूतपूर्व विधान सभा सदस्य, श्री तारा चन्द्र माहेश्वरी, श्री अली असगर हुसैन, श्री पुद्दन राम तथा श्री अब्दुल बाकी के निधन पर शोकोद्गार

*मुख्य मंत्री (श्री श्रीपति मिश्र–)

माननीय अध्यक्ष जी हमारे इस माननीय सदन के सदस्य और भूतपूर्व राज्य मंत्री माननीय राज बिहारी सिंह जी का देहान्त 10 जनवरी, 1983 को 2 बजकर 40 मिनट पर वाराणसी से सर सुन्दर लाल अस्पताल में हो गया। वे 68 वर्ष की आयु के थे। माननीय राज बिहारी सिंह जी पहली बार 1957 में वाराणसी से कांग्रेस के टिकट से इस सदन में चुनकर आये थे। 1969 में पुनः वह आराजी लाइन, वाराणसी से चुनकर आये। 1974 में इसके बाद 1976 में उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए। माननीय राज बिहारी सिंह समर्पित राज नेता और समाज के कार्यकर्ता थे। वे मा0 कमलापति त्रिपाठी, माननीय डाक्टर सम्पूर्णानन्द जी तथा माननीय हेमवती नन्दन बहुगुणा के कार्यकाल में भी शासन में रहे. मा0 सम्पूर्णानन्द जी के समय पार्लियामेन्ट्री सेक्रेट्री, दो मंत्रि मण्डलों में उन्होंने राज्यमंत्री की हैसियत से कार्य किया। आखिर में जब वह विधान परिषद् में औधष्ठाता मण्डल में थे तो उस पद पर भी उन्होंने बड़े सौजन्यतापूर्वक और अच्छी तरीके से अपने कार्य का सम्पादन किया।

श्री राज बिहारी सिंह पुरानी परम्परा के व्यक्तित्व के थे। वह सामाजिक और राजनैतिक सेवा करते हुए अपने अहम को भूले रहते थे। उनके साथ बैठकर यह सीखना आसान था कि किसी आदमी को बिना किसी दुर्भावना के सबसे प्रेम मोहब्बत रखते हुए कैसे काम किया जा सकता है।

मान्यवर, हमारे एक अन्य माननीय नेता श्री रवीन्द्र किशोर शाही जो हमारे प्रान्त के मंत्रि मण्डल के 1977 से आगे तक सदस्य रहे हालांकि वह इस सदन के सदस्य नहीं थे लेकिन मंत्रि मण्डल के सदस्य रहे और वह इस सदन में मंत्रित्व के कार्य के कारण वहां आते थे। उसके पश्चात् वे विधान परिषद् के सदस्य हुए और विधान परिषद् में सदस्य रहे। उन्होंने अपने मंत्रित्वकाल में और विधान परिषद् में सदस्य की हैसियत से अपने सामाजिक और राजनैतिक कार्य को पूर्ण रूप से पूरा किया। उनका निधन 18 अक्टूबर, 1982 को रात्रि लगभग साढ़े ग्यारह बजे लखनऊ में हुआ था। उनकी आयु 54 वर्ष की थी। ऐसे लोग जो राजनीतिक जीवन में अच्छे तरीके से कार्य सम्पन्न कर रहे थे उनसे बड़ी आशाएं थीं लेकिन उनके निधन से हमारे प्रान्त को बड़ा दुःख पहुंचा है।

मान्यवर, ऐसा संयोग है कि इसी सत्र में हमको अपने भूतपूर्व इसी सदन के सदस्य माननीय ताराचन्द्र माहेश्वरी जिनका निधन 15 जनवरी, 1983 को अपराह्न 3.15 बजे हुआ, जो 71 वर्ष के थे। माहेश्वरी जी पहली बार 1952 में सीतापुर से विधान सभा का चुनाव जीतकर इस सम्मानित सदन में आये थी और 1957 में पुनः विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे। ताराचन्द्र जी ने कांग्रेस आन्दोलन में सक्रिय रूप से वर्ष 1941 में भाग लेकर सत्याग्रह किया था। उनको कई बार कठोर कारावास हुआ था। वे 14 वर्ष तक जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष तथा 4 वर्ष तक महामंत्री रहे और इसके अलावा 20 वर्षों तक वे प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य रहे थे। उन्होंने विभिन्न अधिकारों और कार्यों को करते हुए अपना सारा राजनीतिक जीवन जनता की सेवा में व्यतीत किया। ऐसे व्यक्ति के निधन से हम लोगों को निसंदेह क्षोभ है।

मान्यवर, हमारे दूसरे साथी स्वर्गीय अली असगर हुसैन जो इस विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य थे का निधन दिनांक 1 जुलाई, 1982 को हृदय गति रुक जाने से हुआ।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

वे लगभग 62 वर्ष के थे। वे बदायूं जनपद से 1977 में चुनकर विधान सभा में आये थे। वे पहली बार विधान सभा में जनता पार्टी के टिकट पर चुनकर यहां आये थे। उनका राजनीतिक जीवन 1977 से ही प्रारम्भ हुआ था। इसके पहले उन्होंने राजनीति में कोई भाग नहीं लिया था। वे अपने राजनीतिक जीवनकाल में ही बहुत अच्छे जिम्मेदारी के पद पर रहे और पब्लिक एकाउन्ट्स कमेटी, कृषि उत्पादन मण्डी समिति, पंतनगर फारमर वक्फ एवं कृषि संघ आदि से भी सम्बद्ध रहे थे। उनके निधन से उस क्षेत्र के एक अत्यन्त प्रभावशाली और समर्पित कार्यकर्ता की हानि हुई है।

मान्यवर, जो हमारे बहुत से साथी धीरे-धीरे यहां से चले जा रहे हैं उनमें एक विशिष्ट हमारे साथी स्वर्गीय श्री पुद्दन राम भी थे। उनका निधन 5 जनवरी, 1983 को रात्रि 11.30 बजे हो गया। वे 73 वर्ष के थे। वे 1952 में विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र, बांसी पूरब से चुनाव जीतकर इस सम्मानित सदन में आये थे और 1957 तक सदस्य रहे। उन्होंने देश की आजादी की लड़ाई में सक्रिय भाग लिया था और कई बार जेल गये थे। वे कांग्रेस पार्टी के सदस्य थे। निम्न वर्ग, साधारण वर्ग और सफाई कर्मचारियों के लिए उन्होंने बहुत कुछ कार्य किया। वे बस्ती जिला परिषद् के सदस्य भी 1958 में रहे। वे एक उच्च कोटि के सामाजिक कार्यकर्ता थे। समाज सेवा के लिए किसी भी प्रकार की लड़ाई लड़ना उनके लिए बहुत आसान काम था। उनके निधन से एक उच्चकोटि का समाजसेवी उठ गया है।

मान्यवर, दिवंगत माननीय सदस्यों की कड़ी में एक हमारे साथी स्वर्गीय श्री अब्दुल बाकी भी हैं जिनका निधन 28 दिसम्बर, 1982 को रात्रि 8.30 बजे हो गया। यह लगभग 67 वर्ष के थे। वे 1974 में प्रथम बार निर्वाचन क्षेत्र मऊ, जिला आजमगढ़ से कम्युनिस्ट पार्टी के टिकट पर चुनाव जीतकर इस सम्मानित सदन में आये थे। सन् 42 के स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में उन्होंने सक्रिय भाग लिया था और उनका राजनीतिक जीवन "अंग्रेजों भारत छोड़ो" आन्दोलन के साथ प्रारम्भ हुआ था। यह अनेक बार जेल भी गये थे। उसके बाद उन्होंने कम्युनिस्ट पार्टी को ज्वाइन कर लिया। 1969 में साम्प्रदायिक दंगों को दबाने में, साम्प्रदायिक तनाव कम करने और उसे समाप्त कराने में उन्होंने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया था। मौलाना बाकी साहब एक स्वतंत्रता संग्राम के ऐसे सेनानी थे जो सदा ही गरीबों और मजदूरों के अगुआ रहे, उनके नेता रहे, और उनके लिए उन्होंने सदा काम किया।

मान्यवर, इन सभी अपने साथियों के प्रति हम और हमारा दल संवेदना व्यक्त करता है और आपसे निवेदन है कि हमारी शोक संवेदनायें सभी के संतप्त परिवारों तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री राजेन्द्र सिंह–

माननीय अध्यक्ष महोदय, जिन स्वर्गीय भूतपूर्व हमारे साथियों के बारे में संवेदना माननीय नेता सदन ने व्यक्त की है उससे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं।

स्वर्गीय श्री राजबिहारी सिंह जी दो बार इस विधान सभा के सदस्य रहे और विधान परिषद् के भी सदस्य रहे। उन्होंने अपना जीवन वाराणसी में एक म्युनिसिपल बोर्ड के अध्यापक से शुरू किया और बाद में वे राजनीति में आये। धीरे-धीरे वे राजनीति के क्षेत्र में आगे बढ़ते गये। अपने उच्च व्यवहार और कार्य शैली के कारण ही वे जनप्रिय थे और इस प्रदेश के राज्य मंत्री भी रहे श्रीमन्, निश्चित तौर से हमने किसान के और ग्रामीण जनता के एक सेवक, एक शिक्षा प्रेमी और एक अच्छे प्रशासक को खोया है जिसकी

[श्री राजेन्द्र सिंह–]

पूर्ति अभी इतनी शीघ्र सम्भव भी नहीं होगी। श्रीमन्, मैं उनके शोक संतप्त परिवार के प्रति अपने वेदना के भाव व्यक्त करता हूं और आपसे निवेदन करता हूं कि मेरी तरफ से और मेरे दल की तरफ से हमारे वेदना के भावों को उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्रीमन्, दूसरे हमारे साथी रवीन्द्र किशोर शाही जी थे। श्रीमन्, वह इस माननीय सदन के सदस्य तो नहीं रहे लेकिन जनता पार्टी के शासन में विद्युत मंत्री के रूप में उन्होंने कार्य किया। मुझे उनके काफी नजदीक रहते हुए कार्य करने का मौका मिला। वह बहुत निर्भीक थे और स्पष्टवादी थे। श्रीमन् उनके शासन में ग्रामीण क्षेत्रों में जो विद्युत आपूर्ति हुई पिछले 10 वर्षों में भी नहीं हुई। अपने विभाग की उनकी पकड़ थी वह दृढ़ निश्चय के व्यक्ति थे। हालांकि उन्होंने भी अपना जीवन ग्रामीण क्षेत्र से शुरू किया सबसे पहले वह गांव के प्रधान चुने गये, फिर ब्लाक प्रमुख हुए और उसके बाद विधान परिषद् के सदस्य के रूप में यहां आये। उनके निधन से निश्चित तौर पर प्रदेश ने एक निर्भीक, स्पष्टवादी समाजसेवी एक ऐसे कार्यकर्ता को खो दिया है जिसकी पूर्ति निकट भविष्य में होनी संभव नहीं है। श्रीमन्, मैं आपसे निवेदन करता हूं कि आप हमारे इन वेदना के भावों को, मेरे और मेरे दल के वेदना के भावों को उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचने की कृपा करें। मैं अपने और अपने दल की ओर से श्री शाही के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्रीमन्, इसी कड़ी में श्री तारा चन्द्र माहेश्वरी और श्री अब्दुल बाकी, यह दो माननीय भूतपूर्व सदस्य जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग लिया और यातनायें सही, अनेकों बार जेल गये और महात्मा गांधी के नेतृत्व में कार्य किया था उनके प्रति मैं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। बाकी साहब मऊ थाने पर जब भीड़ पर गोली चली तो कई सौ लोग हताहत हुए और मरे थे लेकिन किसी तरह बाकी साहब बच गए और उन्होंने अपने कार्य को आगे रखा। माननीय सदन में वह आये और यह उनका ही योगदान था कि स्वतंत्रता संग्राम में और देश को आजाद करने में उस पीढ़ी को वह एक कड़ी थे और हम सभी को उनके महान देश सेवा के कार्य को आगे बढ़ाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं दोनों स्वर्गीय माननीय सदस्यों के प्रति अपनी और अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे निवेदन करता हूं कि हमारे उद्गारों को, वेदना के इन भावों को उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्रीमन्, स्वर्गीय अली असगर हुसैन साहब सन् 77 में सदन में चुनकर आये थे। कृषि में उनका विशेष लगाव था। उस समय मेरे पास कृषि का भार होने के कारण उनके अति निकट आने का मुझे सौभाग्य मिला। कृषि के बारे में, फसलों के बारे में, फसल चक्र के बारे में उनको बड़ा ज्ञान था। किसानों को किस तरह से राहत दी जाय, क्या सुविधायें पहुंचायी जायं इसके बारे में सदैव वह जूझते रहते थे, झगड़ा लड़ाई भी करते थे। तभी मैं उनके सम्पर्क में आया और मैंने पाया कि श्री अली असगर साहब के अन्दर किसानों के प्रति कितनी वेदना है? वह व्यवहारिक कृषक थे। हमारे बीच से वह बहुत जल्दी चले गये। उनके प्रति मैं और मेरा दल श्रद्धांजलि अर्पित करता है। मैं आपसे निवेदन करता हूं कि हमारी संवेदना उनके दुःखी परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें। श्री पद्दन राम, वह एक गरीब हरिजन परिवार में पैदा हुए थे, लेकिन उन्होंने समाज सेवा और देश सेवा का व्रत लिया था और गरीब रहते हुए भी उन्होंने अपने क्षेत्र की सेवा की। इस माननीय सदन में सन् 1952 में सदस्य के रूप में आये और सन् 42 में देश की लड़ाई में जेल गये और वे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी की एक कड़ी थे और वह कड़ी आज टूटती नजर आ रही है और यह उसी कड़ी के एक सदस्य थे। श्रीमन् ऐसे उन व्यक्तियों के प्रति, समाज के उन महान व्यक्तियों

के प्रति और ऐसे देश भक्तों के प्रति जिन्होंने अपनी पूरी जवानी देश की आजादी की लड़ाई में लगादी, ऐसे महान विभूतियों के प्रति मैं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं, जिसे उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा की जाये ।

श्री हरी किशन श्रीवास्तव–मान्यवर, हमारे सामने आज एक ऐसी घड़ी है जबकि हम आज अपने बहुत से मार्गदर्शकों को श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं, जिन्होंने बहुत दिनों तक इस प्रदेश की सेवा की है। स्वर्गीय राज बिहारी सिंह जी बड़े ही साधारण और बहुत ही सरल स्वभाव के व्यक्ति थे, विशेषकर हम लोगों का उनसे अधिक सम्पर्क नहीं रहा, लेकिन उनके कार्य करने की जो विधि थी, वह हम लोगों को याद है और रहेगी। हम लोग उस समय बहुत ही छोटे कार्यकर्ता थे और हम लोग ऐसा अनुभव करते थे कि वह ऐसे मंत्रियों में से, जिनके द्वारा साधारण से साधारण कर्यकर्ता के लिये सदैव खुले रहते थे और लोग यह अनुभव करते थे कि हमारा उनसे कार्य हो जायेगा, वह हमारे बीच से चले गये।

इसी प्रकार स्व0 रवीन्द्र किशोर शाही जी विशेषकर हम लोगों के बहुत निकट रहे और विरोध पक्ष में कार्य करने के नाते उनसे काफी साथ रहा, वह जनसंघ पार्टी के अध्यक्ष रहे और मैं स्वतंत्र पार्टी का प्रदेश का महामंत्री था। जब मैं लोकदल का महामंत्री हुआ, तब भी बहुत से अवसर उनके साथ कार्य करने के आये और जब वे मंत्री के रूप में रहे तो जैसा कि मा0 नेता विरोधी दल ने कहा कि उनकी अपने विभाग पर जबर्दस्त पकड़ थी और आज भी इनकी जहां-तहां चर्चा होती रहती है कि बिजली में उस समय कमी होते हुए भी उन्होंने किसानों को इसकी कमी को महसूस नहीं होने दिया. वह भी आज हमारे बीच नहीं रहे, और सदैव के लिये चले गये, इसी प्रकार स्व0 ताराचन्द्र महेश्वरी, स्व0 श्री बाकी व स्व0 श्री पुद्दन राम जिनके बारे में माननीय नेता सदन व विरोधी दल ने बताया हम सभी लोगों को ऐसा आभास होता है कि ऐसे लोग जिन्होंने देश की आजादी की लड़ाई में भाग लेकर अपनी हर प्रकार की बड़ी कुरबानी दी और एक-एक करके बिछुड़ते जा रहे हैं।

श्री अली असगर हुसैन साहब जो बहुत थोड़े दिनों के लिए हमारे सम्पर्क में आये, मैंने देखा कि वे किसानों की समस्याओं के बारे में ही चिन्तित रहते थे और जब कभी भी दल की बैठक या कोई और बैठक हुई तो किसानों की समस्याओं पर ही वे विचार व्यक्त किया करते थे। कभी-कभी हम लोग यह कहा करते थे कि आपको तो प्रदेश का कृषि मंत्री होना चाहिए। ऐसे महापुरुष ऐसे संघर्ष करने वाले साथी हम लोगों के बीच से चले गये हैं, हमें इसका हार्दिक क्लेश है और मैं उनके प्रति मैं अपनी व अपने दल की श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे यह निवेदन करता हूं कि मेरे यह संवेदना के भाव मेरे और मेरे दल की ओर से उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

***श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त**–मान्यवर, अभी स्वर्गीय श्री राज बिहारी सिंह, श्री रवीन्द्र किशोर शाही, श्री अली असगर हुसैन, श्री अब्दुल बाकी तथा श्री तारा चन्द्र माहेश्वरी के विषय में जो उद्गार माननीय नेता, सदन, माननीय नेता, विरोधी दल और नेता, लोकतांत्रिक समाजवादी दल ने व्यक्त किये हैं, मैं अपने को उससे सम्बद्ध करता हूं।

श्री राज बिहारी सिंह जी के पास कई बार मुझे जाने का सौभाग्य मिला। वे अत्यन्त ही लोकप्रिय थे और उनके हृदय में अपने से छोटों के प्रति भी स्नेह का भाव रहता था। मैंने यह देखा कि एक विशेष राजनीतिक दल में रहते हुए भी उनका दृष्टिकोण उदार और व्यावहारिक था। वे आज हमारे बीच नहीं हैं। स्वभाविक है कि उनके न रहने से हमारे राजनैतिक जीवन में आघात हुआ है और रिक्तता उत्पन्न हुई है।

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री राजेन्द्र कुमार गुप्ता]

श्री रवीन्द्र किशोर शाही जी के संबंध में पूर्व वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए। माननीय शाही जी भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष थे। प्रयाग विश्वविद्यालय से एम0काम0, एल0एल0बी0 की शिक्षा प्राप्त की और अपना सारा समय सामाजिक कार्य में ही लगा दिया। वे गांव प्रधान से लेकर पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष तक हुए। वे विधान परिषद् के सदस्य भी हुए और मंत्री के नाते इस आदरणीय सदन में बैठे। जो सबसे बड़ी बात उनके जीवन में देखी गई वह यह कि वे एक बड़े जमींदार परिवार से थे लेकिन गरीबों के लिए और छोटे वर्ग के लोगों के लिए उनके मन में विशेष पीड़ा थी, कोई भी दबाव उनको इस मार्ग से हटा नहीं सका। वे जनता पार्टी की सरकार में विद्युत मंत्री थे। विधान सभा में सबसे पहले दिन मेरा सवाल था कि बिड़ला जी को जो इतनी बिजली दी जा रही है तो उनसे बिजली न काटने का क्या कारण है? पहले सवाल के उत्तर में शाही जी ने कहा था कि बिड़ला की 33 मेगावाट बिजली काट ली जायगी, शासन ने निर्णय कर लिया है। इसके बाद उनके ऊपर दबाव पड़ता रहा लेकिन वे झुके नहीं। सुप्रीम कोर्ट में भी जाना पड़ा लेकिन फिर भी वे झुके नहीं

दूसरी विशेषता जो उनमें थी, वह एक संघर्षशील और जुझारू स्वभाव के नेता थे। वे 15 बार जेल गये। आपातकाल में जब वे जेल गये तो उनकी किडनी, लिवर इत्यादि खराब हो गया था, लेकिन उसके बाद भी उनको काम की लगन लगी रहती थी। हम लोग उनसे कहते थे कि अब आप काम करना बन्द कीजिए, आराम कीजिये, लेकिन फिर भी कोई भी प्रतिनिधि मण्डल आ जाय तो अपनी बीमारी के बाद भी वे सतत काम किया करते थे और उससे मिलते थे। ऐसे लगनशील नेता का अभाव हमारी बहुत बड़ी क्षति है। मैं उनकी आत्मा को शान्ति के लिये भगवान से प्रार्थना करता हूं और उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। मान्यवर, ताराचन्द माहेश्वरी जी जिस क्षेत्र के थे, उसी क्षेत्र से आज मैं विधायक हूं और उसी क्षेत्र के वे भी सदस्य थे। वृद्धावस्था में भी वह जुझारु किस्म के थे, मैं शिशुपन से ही उनको जानता हूं। वह एक सामाजिक कार्यकर्ता थे। उनका व्यक्तित्व समाज के लिए समर्पित था यद्यपि उनके कान से सुनाई नहीं पड़ता था परन्तु वे गाना गाते हुए निकला करते थे। वे कांग्रेस पार्टी में ऊंचे से ऊंचे पद पर रहे आखिर में उनके कान से सुनाई नहीं देता था, चलने में भी उन्हें दिक्कत होती थी। सिंधौली से कचहरी 30 मील की दूरी पर है परन्तु उनको लोगों के काम से कचेहरी में घूमते हुए देखा जाता था। लोग उनके पास आते थे, वे अपने विचार प्रकट करते थे। बीमार होने पर भी उनका एक-एक मिनट समाज सेवा के काम में जाता था। उनका जीवन अनुकरणीय था, आदर्श था। उनके न रहने से मेरे जनपद में सही माने में नुकसान हुआ है। मैं उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

स्वर्गीय अली असगर हुसैन साहब पिछले सदन के सदस्य थे, उनके साथ बैठ कर विचार-विमर्श करने में बड़ा आनन्द आता था। वे व्यवहारिक ज्ञान व किसानों की समस्या के धनी थे। उनके न रहने से हम लोगों को बहुत क्षति हुई है।

इसी के साथ स्वर्गीय पुद्दन राम व स्व0 अब्दुल बाकी हमारे बीच से चले गये हैं। ये लोग वास्तव में दुखित वर्ग के सेवक थे। ऐसे लोग जो सामाजिक कार्य में आगे बढ़े, उन्होंने जनता की सेवा की और वे आज हमें छोड़ कर चले गये। एक-एक करके हमारे साथी हमारे बीच से चले जा रहे हैं जबकि आवश्यकता है इस बात की कि उनका मार्गदर्शन हमारे साथ रहे, उनका व्यवहारिक व अनुभव के ज्ञान हमें प्राप्त हों। इन शब्दों के साथ मैं दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे प्रार्थना करता हूं कि उनके शोक संतप्त परिवार तक हमारी भावनायें पहुंचाने का कष्ट करें।

*श्री जनार्दन प्रसाद आंभा–

माननीय अध्यक्ष जी, आदरणीय नेता सदन, नेता विरोधी दल और अन्य दलों के नेताओं ने जो स्वर्गीय राज बिहारी सिंह, रवीन्द्र किशोर शाही, तारा चन्द्र माहेश्वरी, व अली असगर हुसैन, पुद्दन राम तथा अब्दुल बाकी के संबंध में अपने उद्गार व्यक्त किये उनसे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। स्वर्गीय श्री राज बिहारी सिंह जी वाराणसी के युवकों के प्रेरणा के स्त्रोत थे और साथ ही साथ सामाजिक कार्यकर्ता भी थे। राजनैतिक क्षेत्र में भी सभी नेताओं को और सदस्यों को सर्वविदित है कि वे इतने सरल और सहज इन्सान थे कि ऐसे इन्सान कम ही देखने को मिलते हैं।

मान्यवर, शाही जी हमारे पड़ोसी जिले के रहने वाले थे। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद ग्रामीण स्तर से उन्होंने अपना राजनैतिक जीवन की शुरुआत की थी। प्रदेश उनको विद्युत मंत्री के रूप में सदा याद करता रहेगा। उनकी अन्तश्चेतना प्रबल थी। सामाजिक अन्याय के प्रति वे संघर्षशील थे। इसी भावना के वशीभूत होकर शाही जी ने हिण्डालको को ऐसी सख्त चिट्ठी लिखी थी उसका राष्ट्रीयकरण करने के लिये जिसका कि अनुकरण सामान्य लोग नहीं कर सकते और न कर सकेंगे। आज शाही जी हमारे बीच में नहीं हैं लेकिन आने वाली पीढ़ी के लिए, आगे आने वाली सरकार के लिए हिण्डालको के संबंध में उनकी चिट्ठी अपना काम करेगी और मार्ग दर्शन करेगी।

स्वर्गीय अली असगर हुसैन के संबंध में माननीय नेता विरोधी दल ने अपने बहुत विचार प्रकट किये और उनके जीवन पर प्रकाश डाला। आज वे हमारे बीच में नहीं रहे, यह मान्यवर, सामाजिक जीवन में एक रिक्तता है। माननीय अध्यक्ष जी, आज जब ऐसे लोगों की हमें बहुत आवश्यकता है, हमको और समाज को तथा राष्ट्र को क्योंकि आज जिन शक्तियों का उदय हो रहा है, राज्य आज जिस कगार पर खड़ा है आज आवश्यकता उन लोगों की थी जिन्होंने सेक्युलरिज्म के लिए देश की स्वतंत्रता के लिए और देश की अखण्डता के लिए संघर्ष करते रहे। स्वर्गीय अब्दुल बाकी, स्वर्गीय तारा चन्द्र माहेश्वरी और पुर्वान्चल के स्वर्गीय पुद्दन राम जी, उसी श्रेणी में आते हैं। विडम्बना इस बात की है कि जब उनकी आवश्यकता हमें थी तो वह हम से अलग हो गए। इन शब्दों के साथ मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि मेरे पथा दल के विचार और जो श्रद्धांजलि के सुमन हैं वह उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री भीखा लाल–माननीय अध्यक्ष महोदय, आज इस सदन का वातावरण इतना बोझिल है कि एक के बाद दूसरे अपने साथियों और अपने देश और समाज सेवियों की याद में हम अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं। मान्यवर, स्वर्गीय राज बहादुर सिंह, रवीन्द्र किशोर शाही, तारा चन्द्र माहेश्वरी, अली असगर हुसैन, पुद्दन राम और मौलाना अब्दुल बाकी इन सभी दिवंगत आत्माओं के संबंध में माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल तथा अन्य माननीय नेताओं ने जो अपने-अपने विचार व्यक्त किए हैं उनसे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं।

स्वर्गीय राजबिहारी सिंह जी से मेरा परिचय सन् 1957 में हुआ था मैं पहली बार इस सदन का सदस्य चुनकर आया था। वह एक बहुत ही सरल स्वभाव और मृदुभाषी थे और जो कुछ काम या विभाग उनको सुपुर्द किया जाता था वह उसको बड़ी लगन और मेहनत के साथ करते थे। हमें यह याद है जब उनको स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को पेंशन देने का कार्य सौंपा गया तो उन्होंने किसी भी व्यक्ति के प्रार्थना पत्र को अनावश्यक रूप से किसी स्तर पर रूकने नहीं दिया जिसके कारण स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को पेंशन जल्दी-जल्दी मिलती रही।

[श्री भीखा लाल—]

मान्यवर, स्वर्गीय रवीन्द्र किशोर शाही का परिचय उनके विधान परिषद् के सदस्य होने के नाते में हुआ था। विभिन्न कमेटियों में उनके साथ बैठने का अवसर मिला। उनके दृढ़ विचार से मैं काफी प्रभावित रहा। वह काफी लगन वाले व्यक्ति थे।

मान्यवर, स्वर्गीय तारा चन्द्र माहेश्वरी से मेरा परिचय 1957 में हुआ जब मैं पहली बार इस सदन में चुनकर आया था। वह राष्ट्रीय आन्दोलन से निकलते हुए योद्धा थे और वह राष्ट्रीय आन्दोलन की परम्पराओं के धनी थे और उसके सभी गुण उनमें थे। सामान्य जीवन में वह दलगत भावनाओं को नहीं आने देते थे। उनका प्रभाव मेरे ऊपर बहुत है। मान्यवर, मौलाना अब्दुल बाकी जिनके बारे में माननीय नेता सदन ने काफी कहा है यह उन लोगों में थे जो स्वतंत्रता संग्राम सेनानी की अगली कड़ी में आते हैं। जब अंग्रेजों भारत छोड़ो आन्दोलन चला और अंग्रेजों का आतंक बढ़ा उस समय आजादी के मुजाहिदों ने नेदरसोल जैसे अंग्रेज हाकिम की नींद को हराम कर दिया था और उनमें मौलाना बाकी भी थे उनके बाद वह कम्युनिस्ट पार्टी में चले आये। एक अवसर आया, जब मऊ में एक सभा थी जिसमें मुझे भी शामिल होने का अवसर मिला। हमारे माननीय सदस्य खैरुल बशर भी उस सभा में थे। मौलाना अब्दुल बाकी तथा जो आज केन्द्रीय सरकार में राज्य मंत्री माननीय कल्पनाथ राय जी हैं। वे भी उस मीटिंग में थे। उन्होंने अब्दुल बाकी साहब को कहा है कि वे मऊ के लेनिन हैं। मरते वक्त तक वे गरीबों के लिए संघर्ष करते रहे। उन्हें श्वास का मर्ज था। बाद में उन्हें हार्ट-अटैक भी हुआ और अन्त में उन्हें कैन्सर भी हो गया था जिससे कि उनका देहान्त हो गया। हम लोग उनसे कहा करते थे कि आप बीमारी में दौड़ धूप कम किया करें और घर पर बैठ कर कार्यकर्ताओं से मशविरा किया करें लेकिन वे कहते थे कि मैंने जिन्दगी भर उनके बीच में काम किया, उनके लिए ही सेवा करता रहा और उन्हीं के बीच सेवा करते-करते यदि मैं मर भी जाऊं तो मैं अपने को सफल समझूंगा। उस हालत में मऊ में कम्युनिस्ट पार्टी के आफिस की लगभग 70 सीढ़ियों पर वह दिन में 3/4 बार चढ़ते और उतरते थे और वहीं पर सोया करते थे। उनके जाने से मान्यवर, मऊ का ही नहीं, आजमगढ़ को नहीं बल्कि सारा प्रदेश को क्षति हुई है। अन्त में मान्यवर, मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से इन सभी दिवंगत आत्माओं के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि आप हमारी इन भावनाओं को उनके शोक संतप्त परिवारों तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री सूबेदार सिंह—माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय नेता सदन, नेता विरोधी दल तथा अन्य सभी माननीय नेताओं ने जो स्वर्गीय राज बिहारी सिंह, रवीन्द्र किशोर शाही, तारा चन्द्र माहेश्वरी, अली असगर हुसैन, अब्दुल बाकी तथा पदन राम के आकस्मिक निधन पर संवेदनायें व्यक्त की हैं उनसे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। मान्यवर, माननीय राज बिहारी सिंह जी के साथ मुझे रहने का और उनके साथ काम करने का मौका मिला था। वे बहुत ही सरल स्वभाव के थे, स्पष्ट वक्ता थे और देश प्रेम की भावना उनके दिल में कूट-कूट कर भरी हुई थी। उन्होंने मंत्री के रूप में विधायक के रूप में प्रदेश की जो सेवा की है वह हमेशा एक माइल स्टोन के रूप में हमारा मार्ग प्रशस्त करती रहेगी। विभिन्न प्रकार की क्षमताओं से ओत-प्रोत दूसरे लोगों ने आज हमारे बीच में नहीं रहे और जिन्होंने देश की सेवा में हिस्सा बटाया है उन सभी के प्रति मैं अपनी और अपने दल की संवेदनायें प्रकट करते हुए आपसे अनुरोध करता हूं कि आप कृपया उनके शोक संतप्त परिवारों तक ये भावनायें पहुंचाने का कष्ट करें।

श्री केदार नाथ सिंह—मान्यवर, आज सदन में अपने 9 प्रिय नेताओं के निधन पर शोकोद्गार हम लोग व्यक्त कर रहे हैं। मान्यवर, हम समझते हैं कि आज का जो दिन

है वह इतिहास में एक ऐसा दिन है जिसको सामान्य ढंग से भुलाया नहीं जा सकता कि आज हमा लोगों को इतने शोक प्रस्तावों पर शोकोद्गार व्यक्त करना पड़ रहा है । मान्यवर, माननीय राज बिहारी सिंह, श्री रवीन्द्र किशोर शाही, श्री तारा चन्द्र माहेश्वरी, श्री अली असगर हुसैन, श्री अब्दुल बाकी तथा पुद्दन राम जी के शोक प्रस्ताव पर जो संवेदनायें और शोकोद्गार माननीय नेता सदन, नेता विरोधी दल तथा अन्य नेताओं ने व्यक्त किए हैं उनसे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं । मान्यवर, मैं अपने दल की तरफ से इन सम्मानित नेताओं को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आपसे अनुरोध करता हूं कि आप हमारी इन भावनाओं को उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

श्री खैरुल बशर—मान्यवर, आज सदन में स्वर्गीय राज बिहारी सिंह, स्वर्गीय रवीन्द्र किशोर शाही, स्वर्गीय ताराचन्द्र माहेश्वरी, स्वर्गीय अली असगर हुसैन, स्वर्गीय अब्दुल बाकी, तथा स्वर्गीय पुद्दन राम के संबंध में जो विचार नेता सदन, नेता विरोधी दल एवं अन्य नेताओं ने व्यक्त किए मैं भी उनसे अपने को संबद्ध करता हूं और यह निवेदन करना चाहता हूं कि यह ऐसी विभूतियां हैं जो आज हमारे बीच से उठ गई हैं जिनकी आज हमारे देश और प्रदेश को आवश्यकता थी इसके लिए हम आज बहुत दुखी हैं माननीय रवीन्द्र किशोर शाही, तारा चन्द्र माहेश्वरी, पुद्दनराम, अली असगर हुसैन, बाकी साहब की सेवाओं को जितनी सराहना की जाय, वह कम है।
माननीय बाकी साहब से मेरा बड़ा गहरा संबंध था। जब वह देवबंद से निकले तो उसके बाद उन्होंने अपना सारा जीवन देश के लिए अर्पित कर दिया। मैंने 1942 में उनके साथ काम किया वह आजादी के एक मजबूत मुजाहिद सिपाही थे अंग्रेजों ने उनके सामने गोलियां बरसाईं और लाशें बिछा दीं लेकिन वह अपने रास्ते में चट्टान की तरह खड़े रहे अंग्रेज सिपाहियों की गोलियां उनको नहीं हिला सकी ।

ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध मऊ की जनता की उन्होंने अगुवायी की और अपने आखिरी समय तक गरीबों की सेवा में लड़ते रहे, गरीबों की ढाल बन कर वह उनकी हिफाजत करते थे । उन्होंने प्रदेश के बुनकरों का फेडरेशन बना कर उनको संगठित किया । वे सांप्रदायिकता के कट्टर विरोधी थे उन्होंने अपने जान की बाजी लगा कर हिन्दू मुस्लिम एकता की रक्षा की । बाकी साहब ने इंतकाल के एक दिन पहले तक अपने कार्यकर्ताओं की मीटिंग बुलाई थी और उनको एक बहुत बड़ा काम सौंप रहे थे तो इसी बीच उनकी तबियत खराब हो गयी । मैं अपनी और अपने दल की ओर से इन दिवंगत आत्माओं के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करते हुए आपसे अनुरोध करता हूं कि उनके शोक संतप्त परिवार तक हमारी संवेदना भेजने का कष्ट करें । धन्यवाद ।

श्री अध्यक्ष—माननीय नेता सदन, नेता विरोधी दल एवं अन्य माननीय नेताओं ने जो श्रद्धांजलि अर्पित की है और जो भावनाएं प्रकट की हैं मैं अपने को उससे सम्बद्ध करता हूं और इन स्वर्गीय आत्माओं के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं । जहां तक माननीय राजबिहारी सिंह जी का संबंध है मैं 1952 से उनको जानता हूं । 1957 में वे प्रथम बार चुनाव लड़कर आये थे । डा0 सम्पूर्णानन्द जी 1955-56 के आस-पास इस प्रदेश के मुख्य मंत्री थे उस वक्त स्व0 राजबिहारी जी उनके निजी सचिव के रूप में कार्य करते थे । उनके घरेलू सामाजिक और राजनैतिक कार्य में सदा साथ रहते थे ।

[श्री अध्यक्ष–]

मुझे अच्छी तरह से याद है की डा0 सम्पूर्णानन्द जी प्रात:काल से ही स्नान करके पूजा में बैठते थे उस वक्त से श्री राजबिहारी जी उनके साथ रहते और शाम को 10, 11, , 12 बजे तक जब तक डा0 सम्पूर्णानन्द जी कार्य करते थे उनके साथ रहते थे उन्होंने अपना जीवन एक अध्यापक के रूप में आरम्भ किया। शिक्षा उन्होंने शुरुआत में प्राप्त की, लेकिन जितने भी आन्दोलन हुए हैं, उनमें पूरे तरीके से उन्होंने हिस्सा लिया और मुझे अच्छी तरह याद है कि जब-जब यहां पर इस तरह का वातावरण होता था कि यहां पर इस तरह की चीजे होती थी, उस समय राजबिहारी जी उसमें प्रमुख रहते थे। वह सभा सचिव रहे, उन्होंने राज्य मंत्री के रूप में भी कार्य किया। उनकी सेवाओं को जहां तक इस प्रदेश का सम्बन्ध है भुलाया नहीं जा सकता है।

श्री रवीन्द्र किशोर शाही जी के बारे में जो माननीय नेताओं ने विचार प्रकट किए हैं, उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं देवरिया में उनका जन्म हुआ था, गोरखपुर उनका राजनैतिक स्थान रहा। वह इस प्रदेश में मंत्री रहे और समस्याओं को सुलझाने का उन्होंने प्रयन्त किया। जितनी और जो जिम्मेदारी उनको दी गई, उन सबका अच्छी तरह से उन्होंने निर्वहन किया। वह जनता पार्टी में भी प्रमुख स्थान रखते थे और समस्याओं के बारे में जो एक राजनैतिक व्यक्ति की विचारधारा होती है, उसके बावजूद वह उससे हटकर, मिल जुल कर उनको हल किया करते थे।

जहां तक ताराचन्द माहेश्वरी जी का संबंध है, मुझे अच्छी तरह याद है सन् 52 में जब वह चुनकर आए थे, तो वह प्रश्न यहां बहुत किया करते थे। खैर साहब उस समय यहां स्पीकर थे और माहेश्वरी जी इस तरह के व्यक्ति हुआ करते थे कि उनके यहां पर बहुत से प्रश्न हुआ करते थे। माहेश्वरी जी के मामले में वह बहुत जागरूक रहते थे और उनमें वह बहुत मेहनत किया करते थे। उन्होंने अपने प्रदेश में गन्ना आन्दोलन में और बहुत सी शिक्षा संस्थाओं को चलाने में कार्य किया है, जिसको भुलाया नहीं जा सकता है। वह जेल भी कई बार गए। हालांकि वह बहुत पढ़े-लिखे नहीं थे, फिर भी उन्होंने इतनी अधिक शिक्षा संस्थाओं का निर्माण कराया, जो कि आज भी उसी प्रकार से चली आ रही हैं।

इसी प्रकार श्री अली असगर साहब का 62 वर्ष की उम्र में देहान्त हो गया। उनका जन्म जैसा नेता सदन ने कहा 3 अगस्त, 1920 को हुआ था और जो उनका राजनीतिक जीवन था वह सन् 77 में पहली बार प्रारम्भ हुआ था।

पुद्दन राम जी को मुझे अच्छी तरह याद है, कि दुर्बल-पतले व्यक्ति थे, वह बस्ती से सन् 52 में पहली बार यहां पर चुनकर आए थे, स्वर्गीय पुद्दन राम हरिजन थे और हरिजन होने के नाते बहुत कम जेल जाया करते थे, लेकिन अंग्रेजों को देश से उखाड़ने में कई बार जेल भी गये। वह बहुत अच्छे स्वभाव के थे। बस्ती के सदस्यों का उस जमाने में यहां झुंड का झुंड हुआ करता था, उन्होंने विधान सभा में रहकर बहुत कार्य किया।

इसी प्रकार श्री अब्दुल बाकी साहब के बारे में जो मौलाना के नाम से प्रसिद्ध हैं, उनका राजनैतिक जीवन अंग्रेजों के खिलाफ 'भारत छोड़ो आन्दोलन' के साथ प्रारम्भ हुआ था। उन्होंने उक्त आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया था। अंग्रेजों के जमाने में मऊ, आजमगढ़ में जो साम्प्रदायिकता की भावना बहुत ज्यादा उभड़ी थी, उसको उन्होंने दूर किया। उनका स्वभाव अत्यन्त सरल था और वह रात दिन इस तरह से काम किया करते थे जिससे गरीबों को बहुत सहारा मिला। उन्होंने बुनकर के घर पैदा होकर इस तरह से काम किया, जिसको प्रदेश का कोई व्यक्ति नहीं भूला सकता है। नेता सदन, नेता विरोधी दल तथा अन्य नेताओं ने इन लोगों के प्रति जो भावनायें व्यक्त की है और श्रद्धांजलि अर्पित की है मैं उनको उनके परिवार के सदस्यों तक अवश्य पहुंचा दूंगा। अब हम दो मिनट के लिए मौन धारण करेंगे।

(सभी सदस्य दो मिनट के लिए अपने-अपने स्थान पर मौन खड़े हुए)

सर्वोदयी नेता, आचार्य विनोबा भावे, जम्मू कश्मीर के भूतपूर्व मुख्य मंत्री, श्री शेख अब्दुल्ला तथा राज्य सभा के सदस्य, श्री पीलू मोदी के निधन पर शोकोद्गार

*मुख्य मंत्री (श्री श्रीपति मिश्र)–

माननीय अध्यक्ष जी, यह सदन जनप्रतिनिधियों का सदन है, जो हमारे सदन के सदस्य थे या हमारे सदन में जिन्होंने कार्य किया था, उनके दिवंगत होने के सम्बन्ध में हमने अपनी संवेदना इन सदन में व्यक्त की। ऐसे भी लोग हैं जो इस सदन के सदस्य नहीं रहे, मगर जिन्होंने जनमानस, देश को और विदेश को प्रभावित किया और जिनका प्रभाव हमारे विचारों पर और हमारे जन मानस पर पड़ा। संयोग है कि उनमें से भी बहुत से लोग आज हमको छोड़कर चले गए हैं, उनके प्रति आपकी अनुज्ञा से श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहता हूं उनमें से हमारे देश के जाने माने आचार्य विनोबा भावे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के निकटस्थ सहयोगी थे। इनके सम्बन्ध में किसी को बताने की आवश्यकता नहीं है। ये सर्वोदय और भूदान आन्दोलन के जनक थे। ये हमारे यहां राजनैतिक नेता थे, वहीं पर आध्यात्मिक नेता भी थे। इनका निधन 15 नवम्बर, 1982 को सुबह साढ़े नौ बजे परमधाम आश्रम पवनार में हो गया। ये 87 वर्ष के थे।

इनका जन्म 11 सितम्बर, 1895 को महाराष्ट्र के रंगाढ़ जिले के गागोदा गांव में हुआ था। ये वर्ष 1916 में पहली बार महात्मा जी के सम्पर्क में आये। लगातार वह 1920 से आन्दोलनों में भाग लेते रहे और ये जब-जब महात्मा गांधी जी ने इनको निर्देश दिया, 1920, 1923, 1930 में जेल जाते रहे और इसके बाद 1914 में प्रथम सत्याग्रही के रूप में किसानों के लिए लड़ाई लड़ी। इन्होंने एक नए आन्दोलन, भूदान आन्दोलन को जन्म दिया और ग्राम दान, भूदान आन्दोलन ने यहां के बहुत से लोगों को और बहुत से नेताओं को प्रभावित किया जो इनके साथ-साथ सक्रिय रूप से राजनैतिक कार्य में लगे रहे। वह एक ऐसे लोग थे, उनका ऐसा व्यक्तित्व था, जिन्होंने 64 हजार किलो मीटर की पद यात्रा की थी और 60 हजार हैक्टेयर जमीन भूदान के रूप में मांग कर, दान के रूप में तत्पश्चात् निर्बल लोगों में, छोटे लोगों को बांटा गया। ये अपने चरित्र से, अपने विचार से, अपनी भावनाओं से देश की सेवा करते रहे और इसी सेवा के करते रहते इनका अन्त हुआ।

मान्यवर, इन्होंने जनमानस को एक रचनात्मक कार्य करने की दिशा बताई, जिससे बहुत से लोग यहां प्रभावित हुये। उनके निधन से हमें निश्चित ही बहुत बड़ा घाटा हुआ है, इस देश को और बहुत बड़ी कमी हुई है, जो पूरा होना संभव नहीं है। मान्यवर, ऐसी ही कड़ी में एक दूसरे परिपेक्ष में एक दूसरे रूप में हमारे एक दूसरे नेता इस देश के आते हैं, जिनका नाम है स्वर्गीय शेख मोहम्मद अब्दुल्ला। इनका निधन 8 सितम्बर, 1982 को लगभग 7 बजे हुआ। उस समय इनकी आयु 77 वर्ष की थी। इनके पीछे इनकी विधवा पत्नी श्रीमती अकबर जहां बेगम, 2 पुत्रियां एवं पुत्र छोड़ गये हैं। इनका जन्म श्रीनगर में खौरा नामक गांव में सन् 1905 में हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से भौतिक शास्त्र से इन्होंने एम0एस0-सी0 की परीक्षा उत्तीर्ण की और उसके बाद महात्मा गांधी के सम्पर्क में आये। मौलाना आजाद और पंडित जवाहर लाल नेहरू के सम्पर्क में भी ये आये तथा राजनीति में भाग लेते रहे और कश्मीर की समस्याओं को लेकर इन्होंने मुस्लिम एसोशिएशन नामक संस्था बनाई और उनके अंतिम क्षण में कुछ दिनों को छोड़कर बराबर अध्यक्ष रहे और लगभग 50 वर्षों तक राजनीतिक जीवन में रहे।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री श्रीपति मिश्र–]

कश्मीर में दश की पृष्ठभूमि में देश के रंगमंच पर उनका महत्व बराबर बना रहा और हर रूप में उनका जीवन संघर्षमय रहा। अंतिम समय में भी वह कश्मीर के मुख्य मत्री थे। वह एसा व्यक्तित्व कश्मीर में उजागर हुआ जो बराबर कश्मीर के अधिकांश लोगों पर छाया रहा और वहां के अधिकांश लोग उनके पीछे चलते रहे। कश्मीर ने उन्हें शेरे कश्मीर की उपाधि दी थी। एसे आदमी के जाने से देश के एसे प्रभावशाली व्यक्ति के चले जाने से जो कमी हुई है वह पूरी होना सम्भव नहीं है। मान्यवर, कुछ लोग आश्रम और आध्यात्म में रह करके सेवा करते हैं और कुछ लोग सत्ता में आकर सेवा करते हैं। कुछ लोग एसे होते हैं जो अपने व्यक्तित्व से स्वत: जनमानस पर छा जाते हैं।

इसी तरह का एक व्यक्तित्व राज्यसभा के सदस्य श्री पीलू मोदी का था यह मात्र राज्य सभा के सदस्य रहे इससे अधिक पद इनको नहीं प्राप्त हुआ । एक एसे दल के नेता रहे जो पार्टी ही अधिक रूप में अधिकारिक रूप में नहीं आई लेकिन हर दल और हर पार्टी का सदस्य यह महसूस करता था, संयोग से मुझे भी कुछ वर्षों के लिए पार्लियामेन्ट में जाने का अवसर मिला उस वक्त वह सदस्य थे। किसी भी दल का कोई सदस्य कोई भी पत्रकार या और दूसरे आदमी भी होते थे वह इस प्रतीक्षा में रहते थे कि पीलू मोदी से भेंट हो जाय तब कहीं जाय। उनका एसा व्यक्तित्व था। वे एक कलाकार थे वे वास्तु-कला के विशेषज्ञ थे। वे पढ़ने और लिखने वाले लोग थे तथा अपने विचारों को वे निर्भीकता से रखते थे। मान्यवर, उनमें एसा गुण था कि वे अपने विचारों को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से आदान प्रदान करते थे। वे व्यक्तियों को दिशा देते थे कि किस प्रकार से विभिन्न विचारों को रखते हुए एक दूसरे के साथ अच्छा जीवन बिता सकते हैं। एसे व्यक्तियों का जाना हमारे लिए कष्टदायक बात है और मैं अपनी संवेदना अर्पित करता हूं। माननीय अध्यक्ष जी, ये हमारे देश के लोग थे जिन्होंने हमारे जन मानस को प्रभावित किया और जिनके सम्बन्ध में माननीय सदन के समक्ष हमने अपने विचार व्यक्त किये तथा माननीय अध्यक्ष जी, आप के द्वारा हम अपने दल को और अपनी संवेदना उन तक पहुंचाने के लिए निवेदन करते हैं और विश्वास करते हैं कि हमारी संवेदना उन तक पहुंच जायेगी ।

श्री राजेन्द्र सिंह–

अध्यक्ष महोदय, अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आध्यात्मिक संत आचार्य विनोबा भावे एवं अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त राजनेता शेख मोहम्मद अब्दुल्ला, स्वर्गीय पीलू मोदी, के निधन पर नेता सदन ने जो संवेदना के भाव व्यक्त किए हैं मैं और मेरा दल अपने को उनसे सम्बद्ध करता है । श्रीमन्, संत विनोबा भावे जी के बारे में काफी बातें नेता सदन ने कही। विनोबा जी महाराष्ट्र के एक गांव में पैदा हुए थे। शिक्षा भी कोई बहुत ज्यादा उन्होंने नहीं प्राप्त की। लेकिन ज्ञान अवश्य प्राप्त किया। वे काशी में वेद और उपनिषद् का अध्ययन करने के लिए भी आये थे। श्रीमन्, सविनय अनुज्ञा आन्दोलन के लिए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने इन्हें सबसे पहला सत्याग्रही चुना था ।

श्रीमन्, सर्वोदय, भू-दान, ग्राम-दान एवं सम्पत्ति दान के वे जनक थे। सन् 51 में श्रीमन्, जब तेलंगाना के अन्दर किसानों ने विद्रोह किया तो उसी से प्रेरित हो कर उन्होंने भू-दान को प्रारम्भ किया और इसी क्रम में संत विनोबा भावे ने अपने अथक प्रयास से बहुत लम्बी 64 हजार किलोमीटर पैदल यात्रा कर करीब 60 हजार हेक्टेयर भूमि, भूमिपतियों से प्राप्त की थी जिसका वितरण गरीब भूमिहीनों को किया गया । श्रीमन्, जब इसी तेलंगाना किसान विद्रोह से प्रेरित हो कर यह भूदान यज्ञ में लगे हुए थे, तो एक कवि श्री ओम प्रकाश दीक्षित ने अपने कुछ भाव व्यक्त किये थे, मैं उन्हें पढ़ कर सुना देना चाहता हूं–

बापू के प्रतिरूप छोड़कर नश्वर जग को माया,
बने तपस्वी घूम-घूम कर ये ही मन्त्र सुनाया।
भूमि दान दो-भूमि दान दो, सुनो देश के दाता,
किसी एक की नहीं रही यह धरती सबकी माता।
दीन-धनी भू की छाती पर सभी विचरते हैं।।
जिसके बल पर राष्ट्र भवन की मुस्काती दीवारें,
जिसके मन पर गौरव करती शत-शत करुण पुकारें।
श्रमिकों के खण्डहर पर आकर जिसने दीप जलाया.
घर बैठे ही वही तपस्वी धन्य भाग्य जो पाया।
सन्त तभी दर्शन देते, जब पुण्य उभरते हैं।।

श्रीमन्, यह आचार्य विनोबा के भूदान के प्रति एक सच्ची और मार्मिक कविता है।

इसी तरह से जब विनोबा जी 75 वर्ष के हुए तो एक अभिनन्दन ग्रन्थ भी पेश किया गया। मुझे उसे पढ़ने का मौका मिला। माननीय, अपने देश के कवि पंडित बाल कृष्ण शर्मा जी ने भी कुछ पंक्तियां उनके सम्बन्ध में कही। मैं उन्हें भी कह देना चाहता हूं–

तुंग शैल है, गहन सिन्धु है
तुम असीम आकाश प्रमाण
गुण निधान है, नित आकाम तुम
मानवता की एक उड़ान।
हे मानवी क्रान्ति की झंझा
हे तुम मानव के कल्याण
काल पुरुष हे, माल चक्षु है
व्याल बशीर, अमृत निधान।

यह भी आचार्य विनोबा भावे के संबंध में उतनी ही सत्य है। श्रीमन्, सभी ऊंचाइयों के बावजूद हर महान व्यक्ति में कोई कमी रह जाती होंगी और उसी तरह से आपात स्थिति के दौरान आपात स्थिति को आचार्य जी ने किसी भावावेश में, हम तो जेलों में थे लेकिन अनुशासन पर्व की संज्ञा दे दी। उसके साथ उस सन्त ने अपनी उसी गलती का आभास किया मैं तो ऐसा अनुभव करता हूं और, उसी भूल के निवारण के लिए उस महान सन्त ने एक आचार्य कुल सम्मेलन भी आयोजित किया लेकिन उसी आचार्य कुल सम्मेलन के निष्कर्षों को भी महान सन्त, जिसने इस देश को बहुत बड़ी चीजें दी, पूरा करने में सफल नहीं हो पाया।

श्रीमन्, गो-वध पर प्रतिबन्ध लगाने की उनकी अन्तिम अभिलाषा थी और इसके लिए उन्होंने सत्याग्रह भी कर रखा। कई बार शासन से बात-चीत की गई लेकिन शायद सफलता न मिलने के कारण वह महान सन्त मृत्यु की तरफ स्वयं अग्रसरित हो गया। ऐसा हमारा मन कहता है श्रीमन्, उस सन्त में दुर्लभ गुणों का और प्रतिभाओं का समावेश था। वह सन्त थे, प्रकाण्ड विद्वान थे, तीक्ष्ण बुद्धि और विलक्षण स्मृति शक्ति से युक्त थे। विभिन्न भाषण-भाषियों के मनीषी थे। वह प्रतिभाशाली लोक नेता, जन निर्माण के प्रणेता, सक्रिय क्रान्तिकारी, तथा बाल ब्रह्मचारी थे। उनके व्यक्तित्व में ज्ञान, कर्म और भक्ति का एक अद्भुत सम्भव था। ऐसे कर्मयोगी के प्रति मैं व मेरा दल शतशत प्रणाम करता है और अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि उस सन्त के प्रति अर्पित करता है।

[श्री राजेन्द्र सिंह–]

श्रीमन्, उसी कड़ी में हमारे दूसरे राज नेता शेख मोहम्मद अब्दुल्ला जी का भी निधन हुआ और वह हमारे बीच से चले गये। जब तक शेख साहब रहे कश्मीर को लेकर भारत सरकार से उनके कई बातों पर विवाद चलते रहे । काफी दिनों तक उन्होंने जेल यातनाएं भी सहीं स्वतंत्र भारत में। लेकिन वह अपनी बात पर अडिग रहे। कश्मीर के अन्दर उन्होंने एक लम्बा शासन किया और वहां के जन नेता भी रहे। श्रीमन्, उनके चले जाने से निश्चित तौर से हमने एक उच्चकोटि का राज नेता और देश भक्त खो दिया है। कश्मीर उनकी पूर्ति नहीं कर सकता यह निश्चित है। कश्मीर की एक महान शक्ति और इस देश को एक बहुत बड़े राजनेता की क्षति हुई है। श्रीमन्, मैं और मेरा दल उनके प्रति भी अपनी शोक संवेदनायें अर्पित करता है और आपसे निवेदन करता है कि उनके परिवार तक यह संवेदनायें हमारे दल की ओर से पहुंचाने का कष्ट करें।

श्रीमन, तीसरे व्यक्ति थे स्वर्गीय पीलू मोदी जी । कम अवसर मुझे मिला जब वह लोक दल के महासचिव थे लेकिन अखबारों के माध्यम से उनके बारे में काफी जानकारी है। श्रीमन्, वह बहुत विनोदी स्वभाव के थे। वह आध्यात्मिक नहीं थे, बहुत बड़े राज नेता नहीं थे परन्तु अपने विचारों के बहुत धनी थे। हंसमुख स्वभाव के थे। जो बातें प्रारम्भ में उपाध्यक्ष श्री राजेन्द्र सिंह जी के बारे में कहीं वह श्री पीलू मोदी में बहुत प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थी। निर्भीक थे, निडर थे, स्पष्टवादी थे। अपनी बात को स्पष्ट कहते थे वह देश प्रेम से परिपूर्ण व्यक्ति थे और भ्रष्टाचार रहित शासन को देखना चाहते थे । वह देश वास्तु कला के स्कालरकोलर थे । उन्होंने कई बिल्डिंग्स के निर्माण में अपना योगदान दिया, उनके मास्टरपीस बनाए। ऐसे महान नेता के प्रति भी मैं व मेरा दल संवेदनायें व्यक्त करता है। उनकी कमी हम और संसद सदैव अनुभव करते रहेंगे। मेरा आपसे निवेदन है कि हमारी शोक संवेदनायें वह हमारी भावनायें उनके शोकाकुल परिवार को पहुंचाने की कृपा करें ।

माननीय, जहां तक संत विनोबा का प्रश्न है, वे बाल ब्रह्मचारी थे। उन्होंने इस देश की जनता के लिए महान त्याग किया है। उनके सम्बन्ध में हमारे दल द्वारा व्यक्त भावनाओं को पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री हरी किशन श्रीवास्तव–मा0 अध्यक्ष जी, सन्त विनोबा भावे के सम्बन्ध में मेरा जैसा व्यक्ति प्रकाश डाले, यह उसी प्रकार है कि मैं सूर्य के प्रकाश की प्रशंसा करूं क्योंकि उन्होंने जो भी परम सेवा भारत की भूमि पर की है तो उससे मैं समझता हूं कि भारत का बच्चा-बच्चा अवगत है। आजादी की लड़ाई से लेकर आजादी पाने के बाद तक उनका योगदान बहुत महत्वपूर्ण रहा और जिस प्रकार के वे सन्त थे उसी प्रकार की उनमें एक अनोखी अनुभूति थी और दुनियां में एक वालेन्टरी डेथ की पहली मिसाल है जिसकी दूसरी मिसाल इस दुनियां में नहीं मिलती है कि उन्होंने स्वतः अहसास किया कि अब शरीर त्याग करने का समय आ गया हो और उन्होंने दवा, अन्न जल को त्याग करके अपने शरीर का त्याग कर दिया यही सच्चे सन्त की महानता है। इसी के साथ सदन में जो भावनायें व्यक्त की गई हैं उनसे मैं अपने और अपने दल को समबद्ध करते हुये अपना मस्तक नत करता हूं ।

स्व0 श्री शेख अब्दुल्ला को स्व0 पं0 जवाहर लाल नेहरू जी ने शेरे कश्मीर कहा था। उनकी भूमिका कश्मीर के संदर्भ में महत्वपूर्ण होने के साथ-साथ हमारे देश के लिये महत्वपूर्ण इसलिए रही कि कश्मीर की समस्या हमारे देश की महत्वपूर्ण समस्या बनी रही। उनकी सेवाएं जो कश्मीर में रही उसी के कारण अब तक कश्मीर में उनके प्रभाव में कोई कमी नहीं आई और निरंतर ही लोग उनके अनुयायी रहे हैं । मैं ऐसा अनुभव करता हूं कि उनके निधन से कश्मीर की जनता ने एक अपना हितैषी और एक मार्गदर्शक खो दिया तथा भारतवर्ष की बहुत बड़ी क्षति हुई है।

स्व0 श्री पीलू मोदी से मान्यवर, हमारा बहुत घनिष्ट संबंध रहा। उनके साथ मैंने 23 वर्षों से राजनीति में काम किया है माननीय अध्यक्ष महोदय, उनको बहुत लोग जिस दृष्टि से देखते थे, उसके अतिरिक्त भी पीलू मोदी जी बहुत कुछ थे। छोटे और बड़े उनको सभी लोग प्यार से पीलू कहते थे यदि कोई उनको पीलू मोदी जी कहता था तो वे उससे उंगली उठाकर कहते थे कि ऐसा न कहो । उनकी महानता में जितना भी वर्णन करूं कम होगा। दिल्ली में, जब जनता पार्टी जीत कर आयी, उसी समय एग्जीवीशन ग्राउन्ड पर, जनता पार्टी के अध्यक्ष पद के लिये घोषणा होनी थी और उस पद के लिये स्वर्गीय पीलू मोदी का नाम केवल लिया नहीं जा रहा था बल्कि उनके नाम के बारे में निर्णय भी ले लिया गया था। जब उनका नाम लिया गया, तो एक राजनेता ने चौधरी चरण सिंह साहब से किसी ने कहा कि पीलू मोदी जी तो शराब पीते हैं उनको इस पद पर कैसे बनाया जा रहा है? चौधरी साहब ने पीलू मोदी जी से पूंछा कि क्या तुम शराब पीते हो? उन्होंने पूंछा क्यों? चौधरी साहब ने कहा कि जनता पार्टी के अध्यक्ष पद के लिए तुम्हारा नाम लिया जा रहा है। पीलू मोदी जी ने कहा कि हां, मैं शराब पीता हूं।

उस समय कई लोगों ने उनसे कहा कि आप शराब पीते हैं। यह बात सही भी थी कि वे शराब नहीं पीते थे, अगर कहीं किसी पार्टी आदि में एक पैग ले लेते थे तो उसी को घंटों हाथ में लिये रहते थे। इसलिये जब लोगों ने उनसे कहा कि आप तो शराब नहीं पीते, आप यह क्यों स्वीकार कर रहे हैं कि आप शराब पीते हैं। इस पर उन्होंने उत्तर दिया, छी...छी... क्या मैं अध्यक्ष पद पाने के लिये झूठ बोलूं। मान्यवर, मैं व्यक्तिगत रूप से भी उनको जानता हूं कि वे शराब नहीं पीते थे, परन्तु उन्होंने अपनी कटिबद्धता नहीं छोड़ी ।

इसके बाद जब महामंत्री पद के लिये उनके नाम की घोषणा हुई तो उन्होंने श्री मोरारजी देसाई से कहा कि मेरी वह डिस्क्वालिफिकेशन स्टिल एग्जिस्ट। मैं शराब पीता हूं, मैं महामंत्री कैसे बन सकता हूं ? और उन्होंने अस्वीकार कर दिया।

एक बार उन्होंने यह भी घोषणा की थी कि यदि उनकी कान्सटीट्यून्सी का एक भी व्यक्ति ऐसा खड़ा कर दिया जाए जो यह कहे कि वह उनसे असंतुष्ट है तो वे राजनीति छोड़ देंगे। जब सन् 72 का चुनाव वे लड़ रहे थे, श्रीमती इंदिरा गांधी उनके क्षेत्र में गयी थीं । उन्होंने उनके स्वागत के लिए स्वागत-द्वार बनवाये थे और जब प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी सर्किट हाउस में ठहरीं तो उन्होंने उनसे कहा कि मुझे यह भय था कि कहीं कांग्रेस वाले आलस के कारण आपके स्वागत के लिये द्वार न बना पायें, इसलिए मैंने यह द्वार देश की प्रधान मंत्री के स्वागत के लिए बनवाया है, न कि श्रीमती इन्दिरा गांधी के लिये। तो यह था उनका काम करने का तरीका। उस वक्त जब कि कांग्रेस ही सम्पूर्ण दिशा से जीत कर आयी थी से पीलू मोदी साहब फिर भी विपक्ष के उम्मीदवार होते हुए जीत कर आये थे।

एक बार संसद में, स्पीकर महोदय ने पी0एम0 शब्द कह कर संसद में बोलने के लिये बुलाया । उसी समय पीलू मोदी साहब खड़े होकर बोलने लगे। माननीय अध्यक्ष ने कहा -- मैंने आपको नहीं पी0एम0 (प्राइम मिनिस्टर) को बुलाया है। इस पर पीलू मोदी ने कहा कि सर, मी इज टेम्पोरेरी पी0एम0, बट आई एम ए परमानेन्ट पी0एम0। तो इस प्रकार का मनोरंजन वे सदन में किया करते थे। वे जिस विषय पर बोलते थे उस पर इतना अच्छा और गहन अध्ययन उनका होता था जो सुनते ही बनता था। वे एक अच्छे और प्रभावी वक्ता माने जाते थे। बड़े-बड़े नेता और बड़े-बड़े पत्रकार निश्चित रूप से उनके साथ बैठा करते थे और बात किया करते थे और उनसे प्रभावित होते थे।

[श्री हरी किशन श्रीवास्तव–]

उन्होंने एक नयी बात की थी जो समाचार पत्रों में भी आयी थी। उनके मन में एक यह बात आयी थी कि वर्तमान राजनीति में कार्य करने के तरीके में परिवर्तन आना चाहिए। इस कारण मान्यवर, जनता पार्टी के पार्लियामेन्टरी बोर्ड के सदस्य रहते हुए, राज्य सभा के नेता रहते हुए उन्होंने निर्णय कर लिया कि वे जनता पार्टी से अलग हो जायेंगे जिस वक्त कर्नाटक के चुनाव समाप्त हुए वह जनता पार्टी से इस्तीफा देने जा रहे थे। यदि कर्नाटक में जनता पार्टी के मुख्य मंत्री का प्रश्न न उठता तो उनका इस्तीफा हो गया होता। उनका कहना था कि आप लोग कांग्रेस (आई) और इन्दिरा गांधी का विकल्प ढूंढ़ रहे हैं लेकिन मैं वर्तमान राजनीति का विकल्प चाहता हूं। उनका ऐसा विश्वास बन गया है कि जो राजनीति देश में चल रही है उसका विकल्प कोई राजनैतिक दल कांग्रेस (आई) या इन्दिरा गांधी का विकल्प कुछ भी नहीं कर सकता है। इसलिये उन्होंने एक योजना बनाई थी। 5 लाख व्यक्तियों को पत्र भेजने की योजना थी जिसमें से 60 हजार लोगों को वह पत्र भेज चुके थे। पत्र में उन्होंने लिखा था :—

1–क्या यह देश बरबाद हो रहा है,

2–क्या इस देश को बरबादी से बचाना चाहिये,

3–क्या इसे बरवादी से बचाने में आप अपना योगदान दे सकते हैं ? यदि हां, तो मुझे उत्तर दीजिये और यही प्रश्न अपने साथियों से पूछिये और यदि वह इसके लिये तैयार हों तो उनका पता दीजिये। इस सम्बन्ध में उनके पास एक लाख पत्र आ चुके थे। जब हम लोग कहते थे कि आपकी यह योजना कागज पर ही रह जायेगी तो वह कहते थे कि तुम लोगों को मोटर पर लाल बत्ती लग चुकी है और अब लाल बत्ती वाले देश को सुधार नहीं सकते हैं। देश के नौजवानों को साथ लेना पड़ेगा। इस तरह की उनके घर के अन्दर एक निधि मौजूद है जो उन्होंने एक लाख पते रख छोड़े हैं। उनकी मृत्यु के बाद चार, पांच सौ पत्र नित्य उनके पास आ रहे थे, जिस दिन उनकी मृत्यु हुई, उस दिन तो मैंने देखा कि उनके दफ्तर में इंगलैण्ड के पत्र हजारों की संख्या में पड़े थे। मैं सोंच रहा था कि एक व्यक्ति जो अद्भुत कार्य करना चाहता था, एक नई क्रान्ति लाना चाहता था आज दुनिया से अधूरा कार्य छोड़कर चला गया। उन्होंने जनता पार्टी का नाम 'नव निर्माण रखा था। वह कहते थे कि आज जो राजनीतिक सिस्टम चल रहा है उसके परिवर्तन के लिये काम करेंगे चाहे कोई राजनीतिज्ञ हमारे साथ रहे या न रहे। उनके मित्रों में जब मैंने कहा कि पीलू मोदी साहब को रोकिये कि वह जनता पार्टी से इस्तीफा न दें तो उनके दोस्तों ने बताया कि लोगों ने सभी ने उनका साथ छोड़ दिया, क्योंकि वह बुद्धिमानी और विवेक से कार्य नहीं करने जा रहे हैं। सब लोगों ने उनका साथ क्या छोड़ा वह खुद ही सबको छोड़ कर चले गये। ऐसा एक महान व्यक्ति हमारे बीच से चला गया। 28 तारीख को फाइनेंस कंसल्टेटिव कमेटी की बैठक थी। उन्होंने उसमें अपने विचार व्यक्त किये थे। उसी रात्रि को श्री प्रणव मुखर्जी वित्त मन्त्री उनके घर गये और डेढ़ घण्टे तक उनके साथ रहे। उन्होंने कहा कि जो अगला बजट बनाने जा रहे हैं मैं चाहता हूं कि पीलू तुम्हारे विचारों को लेकर कुछ कार्य करें। उनसे परामर्श लेकर भी प्रणव मुखर्जी गये।

इस प्रकार के वह बुद्धिजीवी थे। यूनीवर्सिटीज की स्टूडेन्ट यूनियन्स एवं अन्य संस्थायें पीलू को बुलाते थे और उन्हें अपने बीच पाकर सुख का अनुभव करते थे। हमारा उनसे व्यक्तिगत सम्बन्ध था। इस कारण हमारी बहुत बड़ी व्यक्तिगत हानि हुई है। वह हमारे मार्गदर्शक थे। मैं यह समझता हूं कि हमारे देश का एक योग्य पार्लियामेंटेरियन और स्वच्छ मन का व्यक्ति हमारे बीच से उठ गया। मैं चाहूंगा कि जो मैंने विचार व्यक्त किये हैं और नेता सदन तथा नेता विरोधी दल ने व्यक्त किये हैं उनको आप उनके परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

***श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त**–माननीय अध्यक्ष जी, अभी श्री विनोबा भावे जी, शेख अन्दुल्ला जी और श्री पीलू मोदी के बारे में जो उद्गार माननीय नेता सदन तथा माननीय नेता विरोधी दल तथा नेता लोकतांत्रीय समाजवादी दल ने प्रकट किये हैं मैं अपने को और अपने दल को उनकी भावनाओं के साथ सम्बद्ध करता हूं ।

मान्यवर, स्वर्गीय विनोबा जी एक असाधारण व्यक्तित्व के व्यक्ति थे । वे स्वयं में एक राजनीतिज्ञ, क्रान्तिकारी, दार्शनिक, समाज सुधारक, इन सभी गुणों का एक आदमी में समिश्रण थे। मान्यवर, उनका असली नाम विनायक हरिहर भावे था और जब महात्मा गांधी की दृष्टि उन पर पड़ी, तब वह इनके विचारों और गरीबों व निर्बल वर्ग के प्रति दृष्टिकोण को देखकर काफी प्रभावित हुए और जहां तक देश की आजादी की लड़ाई में भाग लेने की बात है इस पर माननीय नेता सदन और नेता विरोधी दल तथा अन्य दलों के नेताओं ने भी प्रकाश डाला, इन्हीं चीजों को देखकर पूज्य गांधी ने इनका चयन कर इन्हें बड़े ही महत्वपूर्ण कार्य देश के उत्थान के लिये दिये । भूदान आन्दोलन के पश्चात् सम्पत्ति दान और ग्राम दान आदि की रचना भी उन्होंने ही की, ऐसे महान व्यक्ति के प्रति आज हम लोग यहां श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं। उन्होंने अपनी जीवन के अन्तिम दिनों में स्वत: मरण स्वीकार किया इसलिये कि देश की आजादी के इतने समय तक हिन्दुस्तान की परिस्थितियों में कोई निखार व इनमें किसी प्रकार की प्रगति नजर नहीं आयी, तब उन्हें अपनी इच्छा से मरण स्वीकार करना पड़ा, उनसे बहुमूल्य विचारों को ग्रहण करने का श्रेय श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी को जाता है।

नागपुर में विधायकों का एक सम्मेलन हो रहा था, मैं भी वहां पर अनेक सदस्यों के साथ मौजूद था। प्रात: काल श्री बाजपेयी उनसे मिले और उनके विचारों को उन्होंने ग्रहण किया। श्री भावे काफी वृद्धा अवस्था के हो चुके थे, जिसकी वजह से कानों से कम सूनाई पड़ता था, वह अपनी बातें लिखकर किया करते थे, फिर हम लोगों ने श्री बाजपेई से उनसे हुई वार्ता को सुना। मैं एक बात की ओर आदरणीय सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि उनके दिमाग में इस बात की जबरदस्त पीड़ा थी कि हिन्दुस्तान के आजादी के इतने बर्षों बाद भी गोबध बन्द नहीं हुआ है। तब उन्होंने श्री बाजपेई जी से कहा कि अब इसके उत्थान में लग जाओ।

मान्यवर, एक बात का और उल्लेख करना चाहूंगा कि इससे बढ़कर और दु:ख की क्या बात होगी कि हमारे देश के ऐसे विचारक और राजनीतिज्ञ तथा पूज्य गांधी के सिद्धान्तों पर चलने की प्रक्रिया करने वाले कर्णधारों के समय एशियाड में मनों गोमांश रोजाना मेहमानों को परसा गया है, इन्हीं कारणों से उन्होंने स्वत: मरण स्वीकार कर लिया था । इन्हीं शब्दों के साथ मैं उनके प्रति अपनी और अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। शेख अब्दुल्ला हमारे बीच नहीं रहे। ऐसा तो कोई व्यक्ति नहीं होता कि जिसके विचारों से और कृति से शत प्रतिशत सहभाव हो जाय, विचारों में मतभेद हो सकता है, लेकिन जहां तक उनका तरीका है, नेतृत्व का गुण है, सेवा की भावना है, वह ऐसी थी कि वे हमारे राष्ट्र के मूर्धन्य नेता थे। मैं अपने और अपने दल की ओर से उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। उन्होंने ऐसे काम किये थे कि मैं उनकी प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता। जम्मू-कश्मीर में उन्होंने हिन्दी अनिवार्य कर दी थी। पुनर्वास विधेयक एक विवादास्पद बात हो सकती है। कुल मिलाकर वे एक ऐसे व्यक्ति थे जिनसे नसीहत लेनी चाहिए। वे पूरे जम्मू और कश्मीर में बहुत लोकप्रिय थे । भारत सरकार की एक नीति थी, कि जम्मू-कश्मीर में दाम कम

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

[श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त–]

रहे, सस्ता रहे, लेकिन उन्होंने मना कर दिया। चीजों के दाम बढ़ गये लेकिन जरा भी लोगों ने विरोध नहीं किया। मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि हम लोगों की भावनायें उनके शोक सन्तप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री पीलू मोदी आज हमारे बीच नहीं रहे। उनकी अनुपस्थिति केवल संसद के परिसर को ही वीरान नहीं करेगी बल्कि हमारे राजनीतिक वातावरण को भी वीरान करेगी। संसद में उनके तीर चला करते थे लेकिन वे रसभरे हुआ करते थे। जब कभी भी कोई उनके पास गया तो वे इतना अच्छा समभाव रखते थे कि सदैव उसकी सहायता के लिये आगे रहते थे। उनकी मृत्यु 3 दिन पूर्व से एक चिट्ठी आयी थी, एक स्कूल के लिये सहायता मांगी गयी थी, उन्होंने जवाब लिखा कि तुरन्त मिलिये और दो हजार रु0 ले लीजिए। इतने उदात्त विचार होते हुए भी उनके अन्दर विचारों की दृढ़ता बहुत थी, वे अपने सिद्धांतों के आगे कभी झुके नहीं। आज हिन्दुस्तान के राष्ट्रीय मंच से उनकी अनुपस्थिति ने एक बहुत बड़ा अभाव उत्पन्न कर दिया है।

इसके साथ ही मैं सभी दिवंगत आत्माओं के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और प्रार्थना करूंगा कि मेरी यह भावनायें उनके शोक सन्तप्त परिवार तक पहुंचा दी जाय।

*श्री जनार्दन प्रसाद ओझा–मान्यवर, अभी आदरणीय नेता, सदन, नेता विरोधी दल और दूसरे दलों के नेताओं ने आदरणीय श्री विनोबा भावे, शेख अब्दुल्ला, पीलू मोदी के सम्बन्ध में जो विचार व्यक्त किये, मैं अपने को और अपने दल को उनसे सम्बद्ध करता हूं और आपसे आग्रह करता हूं कि मेरी ये भावनायें उनके शोक सन्तप्त परिवार तक पहुंचा दी जायें।

आदरणीय विनोबा भावे गांधी युग के प्रतीक थे और अगर यह कहा जाय कि जिन संस्कृतियों में महात्मा गांधी का विकास हुआ था और जिन भावनाओं को लेकर महात्मा गांधी राष्ट्र नायक बने थे, उनकी अनुभूति उनका संस्करण विनोबा भावे थे, तो कोई अतिशयोक्ति न होगी।

1951 में जो तेलंगाना में भूमि को लेकर क्रान्ति शुरू हुई, उसको उन्होंने एक दिशा दी । भूमि सबको चाहिए । भूमि का अभाव घटता रहे समाज के शोषितों के लिए, जमीदार उसे अपने चंगुल से मुक्त कर सकें इसलिए उन्होंने आन्दोलन शुरू किया। उनके इस प्रयास को देख कर एक साथी ने उन्हें लिखा कि :–

"ओ हठी विनोबा कभी भूमि का दान नहीं होता,
गगन का दान नहीं होता, पवन का दान नहीं होता ।"

लेकिन इसके 8–10 साल के बाद मैंने देखा कि वही मित्र एक झोला लटकाये स्वयं ही भूदानी बन गये थे । जिस बात को उन्होंने सही माना उसके प्रति उनकी कटिबद्धता एक मिसाल अपने आप में है। अपने जीवन के अन्तिम दिनों में उन्होंने जो अनशन किया, इसको हम सब भी महसूस करते हैं और उसका हम सबको भी अहसास है। मान्यवर, ऐसी प्रथा आपको कम देखने को मिलेगी कि जो यह चाहे कि हमारी मृत्यु हो जाय । मनुष्य मृत्यु से बचने के लिए अपनी करोड़ों की सम्पत्ति लगा देता है कि वह मृत्यु से बच जाय जिसके लिए वह सदा प्रयत्नशील रहा है लेकिन आचार्य विनोबा भावे इतिहास के उन अपवादों से ऊपर चले गये उन्होंने कहा कि मुझे तो मरना ही है। बड़े-बड़े राष्ट्र के नेता उनसे मिलने गये और दवा लेने के लिए उनसे प्रार्थना की । जनता पार्टी के अध्यक्ष, श्री चन्द्र शेखर भी गये और घण्टों बातचीत की, बड़ा प्रयास किया कि आपको दवा ग्रहण ही करनी चाहिए, लेकिन विनोबा जी अपनी निश्चितता से नहीं डिगे । जब

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

विनोबा जी ने पद-यात्रा शुरू की, तो लोगों में फब्तियां कसी थी कि जनता पार्टी के अध्यक्ष कन्याकुमारी तक पैदल चल रहे हैं। लेकिन काश, इस देश के जन नेता यदि राज्य में पैदल घूमते तो राष्ट्र की समस्याओं का हल हो जाता।

मान्यवर, आचार्य विनोवा भावे आज हमारे बीच नहीं हैं परन्तु उन्होंने अपनी जो प्रेरणा देश को दी है, मुझे विश्वास है कि आने वाली पीढ़ी उसका अनुसरण करेगी। इसके साथ ही मैं दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

स्वर्गीय शेख मोहम्मद अब्दुल्ला इन्सानियत और जम्हूरियत के सच्चे प्रतीक थे। जब इस देश का इतिहास लिखा जायेगा तो शेख मोहम्मद अब्दुल्ला का नाम अपने आप आ जायेगा। आज कश्मीर जो भारत का अंग है, इसका श्रेय केवल उन्हीं को है। उनका पूर्ण व्यक्तित्व कश्मीर पर समर्पित था इसीलिए वहां की जनता ने उन्हें "शेरे कश्मीर" की उपाधि दी थी। उनके निधन से देश ने एक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और कश्मीर का सर्वाधिक प्रभावशाली नेता खो दिया है।

स्वर्गीय श्री पीलू मोदी, जनता पार्टी के राज्य सभा के सदस्य थे और वे एक जन-तंत्रवादी थे। अभी जनता पार्टी की राज्य परिषद् की मीटिंग थी तो उसमें एक प्रस्ताव आया कि जो लोग जनता पार्टी से अलग हुए हैं, उनको फिर से लिया जाय परन्तु उन्होंने इसका विरोध किया। और जब यह प्रस्ताव उनके सामने आया तो उन्होंने कहा कि मैं जनतंत्रवादी हूं, इसलिए जो भी प्रस्ताव पारित हुआ है उससे मेरी सहमति है। स्वर्गीय पीलू मोदी एक हाजिर जवाब थे। संसद के गलियारे उन्हें इस बात के लिए सदैव याद करेंगे। उनके चेहरे पर कभी भी उद्विग्नता दिखायी नहीं देती थी। वह अपने विचारों के पक्के थे। उनमें दृढ़ता थी और उनमें समाज सेवा की भावना थी। इतना होते हुए भी उन्होंने समाज को नजदीक से देखने की कोशिश की। वह एक आर्किटेक्ट भी थे। इन शब्दों के साथ मैं अपनी और अपने दल की भावना को माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल और अन्य जो नेताओं ने भावनायें व्यक्त की हैं उनसे सम्बद्ध करता हूं और आपसे निवेदन करता हूं कि मेरी शोक संवेदनायें शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री भीखा लाल—माननीय अध्यक्ष महोदय, संत विनोवा भावे, जैसा कि माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल और अन्य माननीय नेताओं ने अपनी भावना व्यक्त की है, महात्मा गांधी के सच्चे अनुयायी थे और संत के रूप में देश के नेता थे और समाज सेवी भी थे। देश की उनको चिन्ता थी। आज हमारे देश में तमाम सन्त पैदा हो रहे हैं, आचार्य पैदा हो रहे हैं और साधू उत्पन्न हो रहे हैं जो राजनीति में आने की कोशिश कर रहे हैं और जिनको राजनीति में लाने की कोशिश भी की जा रही है, लेकिन वह न तो संत हैं और न राजनीतिक नेता हैं और वह छल और कपट करते हैं, लेकिन विनोवा जी सही माने में संत थे और नेता थे। हमारे और उनके रास्तों में फर्क हो सकता है। हम किसी दूसरे रास्ते से देश में समता और समानता, सम्पत्ति और धन का वंटवारा चाहते हैं, वह दूसरे रास्ते से चाहते थे लेकिन लक्ष्य एक ही था। विनोवा जी को अपने प्रति कोई लालसा नहीं थी वह देश के प्रति ही जिन्दगी भर संघर्ष करते रहे और संघर्ष करते हुए अपने प्राणों की आहुति की। ऐसे नेता और सन्त के निधन से देश को अपार क्षति हुई है। मैं उनके प्रति अपनी श्रद्धा के सुमन पेश कर रहा हूं और अपनी सम्वेदना व्यक्त करता हूं।

स्वर्गीय अब्दुल्ला के प्रति जो कुछ कहा गया है उससे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। शेख अब्दुल्ला के संबंध में यह सही है कि कुछ विवाद रहा है लेकिन वह एक देश के जाने माने नेताओं में से थे। आज कश्मीर हिन्दुस्तान के साथ

[श्री भीखालाल]

है इसमें शेख साहब का योगदान रहा । और वह हिन्दुस्तान सीमा के सजग प्रहरी थे । उनका निधन हमारे लिये कष्ट प्रद है और उनके निधन से हमारे देश को हानि हुई है वह पूरी नहीं हो सकती है । उनके प्रति मैं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

स्वर्गीय पीलू मोदी राज्य सभा के सदस्य थे । उनका मेरा निजी परिचय नहीं था लेकिन जो अखबारों में और जो क्रिया कलाप पार्लियामेंट के अन्दर हुआ करते थे उनसे मैं भी परिचित हूं और सभी लोग परिचित हैं कि वे कितने अच्छे पार्लियामेंटेरियन, हाजिर जवाब और खुश-मिजाज आदमी थे । वे आज हमारे बीच में नहीं रहे । कितने ही हमारे पार्लियामेंट के साथी उनकी आज कमी महसूस कर रहे है और आगे भी महसूस करेंगे । उनके प्रति भी मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं । इन शब्दों के साथ मैं दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और अध्यक्ष महोदय, आपसे निवेदन है कि हमारी संवेदना इन सभी दिवंगत आत्माओं के शोक संतप्त परिवारों तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

*श्री सूबेदार सिंह—माननीय अध्यक्ष महोदय, इस सम्मानित सदन का गौरव है कि उन महान आत्माओं के प्रति भी श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा है जो इस सदन के सदस्य नहीं थे लेकिन जिन्होंने देश की और दुनिया के जीवन को सामाजिक या सार्वजनिक रूप से किसी न किसी प्रकार से प्रभावित किया ।

मान्यवर, जब हम संत विनोवा भावे की बात करते हैं तो भारत के इतिहास में एक ऐसे अग्रणीय नेता के रूप में हुआ था जो देश के लोगों के बीच की खाई को पाटना चाहता था उन्होंने उसके लिये भूमिदान और सम्पत्तिदान का आन्दोलन चलाया । वह इस बात के प्रतीक थे कि जो समाज में आर्थिक और सामाजिक विषमतायें हैं वह दूर हो, उनकी कल्पना थी कि गरीब ऊपर उठे और अमीर नीचे आकर समानता आये । आज जो अमीर और अमीर होता जा रहा है और गरीब और गरीब होता जा रहा है उसको वह मिटाना चाहते थे तो ऐसे समय में जब गरीबों का एक्सप्लोयटेशन हो रहा है उस समय उनका निधन हो जाना उनके लिये और भी दुखदायी है । ऐसे अवसर पर अगर हम सही रूप में उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहते हैं तो यह आवश्यक है कि उनकी प्रेरणाओं से सबक लें और उनके विचारों और संकल्पों को कार्यरूप दें ।

स्व0 शेख अब्दुल्ला एक विवादाग्रस्त व्यक्ति जरूर थे लेकिन उनकी निष्ठा, उनकी स्वतंत्रप्रियता, उनकी लोकप्रियता ही रही है कि जिसकी वजह से कश्मीर के इतिहास में उनका साम्राज्य कायम रहा है । मुझे वहां उनके गांव तक जाने का मौका मिला है निश्चित रूप से उनको वहां के लोग देवता के रूप में मानते हैं । इस देश के इतिहास में उनका अभूतपूर्व स्थान है । उनके निधन से देश को महान क्षति हुई है । हम सभी उनके निधन से दुखी हैं ।

स्व0 पीलू मोदी जी का स्थान पार्लियामेंटरी इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण है । हम लोग लोकतंत्र के इतिहास में उनके जीवन से हमेशा दिशा ग्रहण करेंगे । उनके निधन से सामाजिक जीवन में जो शून्यता आयी है उसकी पूर्ति होना सम्भव नहीं है ।

अन्त में मैं आपसे निवेदन करता हूं कि हमारे और हमारे दल की ओर से शोक संवेदना के विचार इन सभी के परिवारों तक पहुंचाने की कृपा करें । इन शब्दों के साथ मैं नेता सदन, नेता विरोधी दल तथा अन्य नेताओं ने जो विचार व्यक्त किये हैं उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूं ।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

श्री केदार नाथ सिंह—मान्यवर, इस देश में बहुत सी उच्चकोटि के समाजसेवी और राजनैतिक महान् विभूतियां हुई, जिन्होंने अपने कार्यों से अपने नाम को रोशन किया और उसमें से कुछ ऐसी भी महान् विभूतियां हुई, जिन्होंने इस सदन में या देश के किसी भी अन्य सदन में जाने की कभी इच्छा तक नहीं की। लेकिन उन लोगों के उत्कृष्ट कृत्य रहे हैं, अच्छे कार्य रहे हैं देश के प्रति, समाज के प्रति कि जिसके मुकाबले में हमारे सरीखे इस सदन के सदस्यों की सदन के बाहर कर पाना मुश्किल रहा है। मान्यवर, विनोबा जी और महात्मा गांधी जैसी महान् विभूतियां ऐसी ही रही हैं, जिन्होंने इस सदन में आने की या संसद में जाने की इच्छा तक नहीं की। मान्यवर, इनके हृदय मे, समाज में हो रहे उत्पीड़न की व्यथा थी, देश की जो दुर्दशा हो रही थी, उसको देखकर विनोबा जी को काफी क्लेश रहा है और जिन क्षणों में जिस प्रकार से उनका निधन हुआ है वह काफी दुखदायी रहा है।

इतना ही नहीं उनके निधन ने हमारे देश के संविधान के सामने आई० पी० सी० और समाज के सामने एक प्रश्नचिह्न लगा दिया है। कहने का तात्पर्य यह है कि उनके कार्यकलापों का और हमारा और आप का जो मेल रहा है, इस पर कोई विचार व्यक्त करना इस समय उपयुक्त नहीं है जो केवल इतना कहना चाहता हूं कि उनका निधन बहुत दुखदायी रहा है और उससे हमारे हृदयों में काफी क्षोभ व्याप्त है। मान्यवर, ऐसी महान् विभूतियों के प्रति आज हम श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं अपने और अपने दल की तरफ से।

मान्यवर, यह शेख अब्दुल्ला जी जो हमारे बीच में नहीं रहे, उनका जो भारत के स्वतंत्र होने के पश्चात् का कार्यकाल रहा है उसके पूर्वार्द्ध के समय में उनके प्रति पाकिस्तान और हिन्दुस्तान में बहुत भ्रान्तियां फैलाई थीं। लेकिन बड़े ही फख्र की बात है, वह सारी भ्रान्तियां, उनके उत्तरार्द्ध का जो समय रहा है उसमें स्वतः दूर हो गयीं। ऐसे महान् पुरुष को हम अपनी तरफ से और अपने दल की तरफ से श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

पीलू मोदी साहब के बारे में मैं ज्यादा नहीं जानता, लेकिन जब हमने राजनैतिक जीवन में प्रवेश लिया, उस समय उनके जो संसद के बयान आते थे, संसद के जो विवरण अखबारों में पढ़ते थे, उन वक्तव्यों को हम उस समय बड़े चाव से पढ़ा करते थे, और यह महसूस करते थे कि उनके पढ़ने से हमें पार्लियामेंटेरियन ज्ञान प्राप्त होगा। ऐसे मृतक लोगों की शान्ति के लिए मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं और यह अनुरोध करता हूं कि आप हमारी श्रद्धांजलि को और संवेदना को हमारी एवं हमारे दल की तरफ से उनके शोक सन्तप्त परिवारों तक पहुंचाने का आप कष्ट करें।

श्री अध्यक्ष—माननीय नेता सदन, नेता विरोधी दल और दलों के नेताओं ने जो श्रद्धांजलि और संवेदना के भाव यहां प्रकट किये हैं, मैं भी उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूं। जहां तक विनोबा भावे जी का सम्बन्ध है, काफी विचार किया जा चुका है। महात्मा गांधी जी के बाद देश में आवश्यकता इस बात की थी, कि कौन उनके बाद उनका कार्य करेगा, किस प्रकार से देश में कार्य होगा और उन गरीबों की सुनने वाला कौन होगा?

वह काम सौंपा गया आचार्य जी को। आचार्य जी अगर चाहते आजादी के बाद, तो जैसे और लोग सरकार में चले गये, राजनीति में चले गये, वह भी जा सकते थे, किन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया एक तरफ वह हो गये, दूसरी तरफ इस विचार धारा के लोग हो गये कि हमको कुछ नहीं चाहिए, हम लोग जेलों में गये, हमें तो जेलों में जाने के बाद उन समस्याओं को हल करना है, जो गरीबों से संबंधित है। भावे जी माना कि हमारे बीच में नहीं है, लेकिन सच्ची श्रद्धांजलि तो तभी अर्पित हो सकती है कि हम उनके

[श्री अध्यक्ष]

कदमों पर चलें, जो कार्य उन्होंने अधूरा छोड़ दिया है, उनको पूरा करें। आज जहां पर कश्मीर के बंधुओं का संबंध है, जहां पर ग्रामदान का सम्बन्ध है, जैसा कि मैंने निवेदन किया सच्ची श्रद्धांजलि तो तभी उत्पन्न हो सकती है कि जितने माननीय सदस्य यहां पर बैठे हुए हैं और जो इस विचारधारा के हैं और जो उनका कार्य अधूरा था, जिस प्रकार से भी हो पूरा करने में योगदान करें तभी श्रद्धांजलि अर्पित हो सकेगी।

जहां तक स्व0 शेख अब्दुल्ला की बात है, शेरे कश्मीर उनको कहा जाता था। मुस्लिम यूनिवर्सिटी से उन्होंने एम0एस0सी0 पास किया था। कुछ दिन वे अध्यापक रहे और उसके बाद में 1930 में जाकर उन्होंने राजनीति में प्रवेश किया। पंडित जवाहर लाल नेहरू, मौलाना अबुल कलाम आजाद और महात्मा गांधी में विश्वास करने के बाद में जहां तक कश्मीर का सवाल था, उन्होंने बहुत कार्य किया और आज जो कश्मीर को देखते हैं, उसमें उनकी बहुत बड़ी देन है। वे 10–12 बार जेलों में गये, आज जिस प्रकार का वातावरण कश्मीर का है, उसका सबसे बड़ा श्रेय शेख अब्दुल्ला साहब को जाता है।

स्व0 पीलू मोदी के बारे में जैसा कहा गया, यद्यपि मेरा, उनका व्यक्तिगत परिचय नहीं था, राज्य सभा में जितनी बातें होती थीं, मजाक की नहीं हाजिर जवाबी की बातें जो हो सकती थी, सबसे आगे वह आते थे और तमाम समस्याओं का समाधान करते थे। इन शब्दों के साथ मैं अपनी तरफ से और माननीय सदन की तरफ से माननीय नेताओं ने जो भाव प्रकट किये हैं मैं उनके परिवारों तक पहुंचा दूंगा। अब हम दो मिनट खड़े होकर इनको श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे।

(सभा सदस्य दो मिनट के लिए अपने-अपने स्थान पर मौन खड़े हुए।)

रूस के राष्ट्रपति श्री लियोनिद इलयिच ब्रेझनेव के निधन पर शोकोद्गार

*मुख्य मंत्री (श्री श्रीपति मिश्र)–माननीय अध्यक्ष जी, आज आपके समक्ष ऐसे व्यक्तित्व का नाम मैं रखना चाहता हूं। जिन का सम्बन्ध इस देश से बहुत अधिक रहा है। सोवियत संघ के राष्ट्रपति श्री लियोनिद इलयिच ब्रेझनेव का 10 नवम्बर, 1982 को हृदय गति रुक जाने से मृत्यु हुई। वे 76 वर्ष के थे। इनका जन्म 19 दिसम्बर, 1906 को सोवियत संघ के नगर यूक्रेन में हुआ था। ये मूलतः इंजीनियर थे। 1937 में सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी में आये और तत्पश्चात साधारण स्तर के पद से लेकर ये पार्टी के सर्वोच्च पद पर प्रतिष्ठित हुए और राष्ट्रपति के रूप में इन्होंने 18 वर्ष तक कार्य किया और वहीं काम करते इन्होंने अधिक से अधिक ओहदे, पद और खिताब हासिल किये।

इनके प्रति एक विशेष उल्लेख हमारे लिए इस माननीय सदन में करना आवश्यक होगा। 1961 में पहली बार ये भारतवर्ष आये थे। उस वक्त पुर्तगाली कालोनी हमारे पड़ोस गोवा में थी यह स्वतंत्र नहीं थी और उस वक्त स्वतंत्रता की बात चल रही थी। पहली बार एक विदेशी अधिकारी ने यह घोषणा की, कि गोवा आजाद होना चाहिए। इस आजादी की लड़ाई में हमारा देश उनके साथ है। इस घोषणा की तीव्र प्रतिक्रिया बाहर हुई। एक ऐसी बात उन्होंने कही जिस का इस देश को, इस देश के लोगों को आज तक एहसास है। तब से सोवियत संघ और इन का व्यक्तित्व हमारे प्रति संवेदनशील रहा। ये एक ऐसे देश के नेता थे जिन्होंने पूरे विश्व के परिपेक्ष्य में मानव जीवन को संचालित करने में एक दिशा दी। ऐसे व्यक्तियों से राजनीतिक रूप से उनके और हमारे एक विचार हों या भिन्न विचार हों लेकिन ये ऐसी शक्ति हैं जिन्होंने पूरे देश को, पूरे विश्व को, प्रभावित किया है। आज इनके उठ जाने का हमें दुःख है। हम उनके प्रति संवेदनशील हैं और माननीय अध्यक्ष जी आप के द्वारा हम अपने दल की और अपनी संवेदना उनके परिजनों तक पहुंचाने के लिए निवेदन करते हैं और विश्वास करते हैं कि हमारी संवेदनायें उन तक पहुंच जायेंगी।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

श्री राजेन्द्र सिंह–

माननीय अध्यक्ष जी, श्री ब्रेझनेव, अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के नेता थे और भारत के ये मित्र थे। चाहे गोआ लिबरेशन का मामला हो या भारत और पाकिस्तान युद्ध का प्रश्न रहा हो, जब कभी इस देश पर विदेशी किसी शासन ने आक्रमण किया हो या श्रीमन्, कभी संकट के बादल इस देश में छाये हों तो श्री ब्रेझनेव ने सदा इस देश का साथ दिया और संकट की घड़ियों में हमारे देश की सहायता की। उनके निधन से जहां विश्व ने एक उच्च कोटि का अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त नेता खोया है वहीं सोवियत संघ ने अपने एक महान् निर्माता को भी खो दिया है और भारत ने अपना सच्चा मित्र खो दिया है। मैं और मेरा दल उनके निधन पर श्रद्धांजलि अर्पित करता है और आपसे निवेदन करता हूं कि आप मेरी भावनाओं को उनके परिजनों तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री हरी किशन श्रीवास्तव–

माननीय अध्यक्ष जी, श्री ब्रेझनेव के बारे में जो विचार हमारे नेता सदन तथा विरोधी दल ने व्यक्त किये हैं मैं भी अपने को और अपने दल को उनसे सम्बद्ध करता हूं और ऐसा अनुभव करता हूं कि भारत ने अपना एक बहुत बड़ा मित्र खो दिया है। इन विचारों के बाद मैं अपने तथा अपने दल की ओर से उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त–

माननीय अध्यक्ष जी, श्री ब्रेझनेव विश्व एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के नेता थे। हमारे देश के साथ उनके मित्रता के भाव का सदैव उल्लेख किया जायेगा। उनके कार्यकाल में 18 वर्ष तक वे सोवियत संघ के राष्ट्रपति रहे और इस काल में रूस ने सामरिक, तकनीकी और वैज्ञानिक दृष्टि से काफी विकास किया। उन्होंने अमरीका के साथ तनाव शैथिल्य की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया।

इसके साथ ही मैं उनकी दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और प्रार्थना करूंगा कि मेरी यह भावनायें उनके शोक सन्तप्त परिवार तक पहुंचा दी जायं।

श्री जनार्दन प्रसाद ओझा–

मान्यवर, स्वर्गीय ब्रेझनेव रूस की नियामत थे। 18 वर्ष का रूस स्वर्गीय ब्रेझनेव के सपनों का रूस है। राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में रूस ने जो कमाल दिखाया है वह स्वर्गीय ब्रेझनेव की कर्मठता का प्रतीक है। आज वह हमारे बीच नहीं रहे। हमारे श्रद्धा के सुमन उनको अर्पित हैं। मान्यवर, मेरी शोक संवेदना उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री भीखा लाल–

माननीय अध्यक्ष जी, कामरेड एल0 आई0 ब्रेझनेव जो सोवियत यूनियन के राष्ट्रपति थे, उनका निधन हो गया। उनके निधन पर जो माननीय नेता सदन, नेता विरोधी दल तथा अन्य दल के नेताओं ने जो विचार व्यक्त किये हैं उनसे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। कामरेड ब्रेझनेव का जन्म 1906 में एक साधारण परिवार में हुआ था। उन्होंने अपनी जिन्दगी एक स्टील के कारखाने में मजदूर की हैसियत से शुरू की और अपनी क्षमता, योग्यता, कर्मठता और क्रान्तिकारी भावनाओं से ओत-प्रोत होकर उनमें मजबूती लाकर वे इतने बड़े देश सोवियत यूनियन की कम्युनिस्ट पार्टी के महामंत्री और उसके बाद राष्ट्रपति हुए। वे इतने बड़े राजनेता थे कि उनके निधन से केवल सोवियत यूनियन की ही क्षति नहीं हुई है बल्कि आज दुनिया के सर्वहारा वर्ग के लोग, मेहनतकश लोग जिनके लिए वे संघर्ष करते थे, जिस शोषण-विहीन समाज को वे वहां पर रचना करना चाहते थे, उनकी भी क्षति उनके निधन से हुई है। इसके अलावा दुनिया के विकासशील देश जिसमें भारत भी शामिल है, जो देश स्वावलम्बी बनने में उनसे मदद चाहते थे, उन्हें तो उनके निधन से अपार

[श्री भीखा लाल]

क्षति हुई है। कामरेड ब्रेझनेव की मदद जो साम्राज्यवादी देशों की आंखों में किरकिरी की तरह खटकती थी, जब कि दूसरे देशों का शोषण किया करते थे, उन विकासशील देशों की भी क्षति हुई है। साथ ही उन समाजवादी मुल्कों की भी हानि हुई है जिनके वे रक्षक थे, जिन मुल्कों की आजादी हड़पने के लिए सम्राज्यवादी देश गीध दृष्टि लगाये बैठे थे। मान्यवर, सबसे बड़ी हानि हमारे देश को हुई है। हमारे देश ने एक बड़ा मित्र खो दिया है। उनके नेतृत्व में चाहे वह गोआ का आन्दोलन हो, बंगला देश का आन्दोलन हो, चीन और हिन्दुस्तान की लड़ाई हो, हिन्दुस्तान के हाथ मजबूत किए हैं। वह हमेशा हिन्दुस्तान के साथ खड़ा रहा है। हम कामरेड ब्रेझनेव के उन शब्दों को नहीं भूल सकते जबकि चीन ने हिन्दुस्तान पर हमला किया था तब उनसे कहा था कि आप हमारी मदद करें। इस पर ब्रेझनेव ने कहा था कि एक तरफ तो हमारा भाई लड़ रहा है और दूसरी तरफ हमारा मित्र लड़ रहा है। लेकिन हमारा भाई जो लड़ रहा है, वह सिद्धान्तहीनता की लडाई लड रहा है, जाने-माने और जनतंत्र के सिद्धान्तों का उल्लंघन कर रहा है और यदि कोई भी देश इस तरह से किसी भी देश पर विस्तारवादी नीतियों से लड़ाई लड़ता है और आपसी बातों से निपटारा नहीं करता है जिसका कि चीन ने उल्लंघन किया है इसलिए हम अपने भाई की मदद नहीं करेंगे, हिन्दुस्तान की मदद करेंगे। सन् 71 में भारत ने सोवियत यूनियन के साथ मैत्री की। संधि हुई जिसमें कि सोवियत यूनियन हमारी मदद के लिए चट्टान की तरह खड़ा हुआ। हिन्दुस्तान और सोवियत यूनियन की मैत्री इस बात से भी ज्यादा मजबूत है कि उनकी वैदेशिक नीति भी दुनियां में शांति चाहती है और हमारी वैदेशिक नीति भी शांति चाहती है। कामरेड ब्रेझनेव दुनियां के साम्राज्यवाद खतम करना चाहते थे। वे नहीं चाहते थे कि दुनियां में युद्ध हो अमेरिका के प्रयासों के बावजूद उनके प्रयास से तीसरा विश्वयुद्ध नहीं छिड़ पाया है। आज कामरेड ब्रेझनेव के न रहने से सारी दुनियां को नुकसान हुआ है और हमारे देश को सबसे ज्यादा नुकसान हुआ है। हमने अपना परम मित्र खो दिया है। इन शब्दों के साथ मैं दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और अध्यक्ष महोदय आपसे निवेदन है कि हमारी संवेदना दिवंगत आत्मा के शोक परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

श्री सूबेदार सिंह–

मान्यवर, लियोनिद ब्रेझनेव समाजवादी विचारों, प्रगतिवादी विचारों के व्यक्तियों में से प्रमुख रहे हैं। वह गरीबों की लड़ाई लड़ते थे और समाज में समानता लाना चाहते थे। विश्व में इस विचारधारा के लोगों को बड़ी क्षति हुई है और निश्चितरूप से हमारे राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय जीवन पर इसका भारी असर पड़ा है। हम सभी उनके निधन से दुःखी हैं। उस महान विभूति के निधन से जो शून्यता आई है वह हमारे लिए चिंता का विषय है। मैं आपसे निवेदन करता हूं कि हमारे और हमारे दल की ओर से शोक संवेदना के विचार उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें। इन शब्दों के साथ नेता सदन, नेता विरोधी दल तथा अन्य नेताओं ने जो विचार व्यक्त हैं उनसे अपने को संबद्ध करता हूं।

श्री केदार नाथ सिंह–

मान्यवर, ब्रेझनेव साहब, जो रूस के एकमात्र नेता थे, 18 वर्ष तक जिन्होंने रूस के नवनिर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया, यह रूस के नेता तो थे ही, भारत के परम सहयोगी मित्र थे। उनकी मृत्यु से हमारे प्रदेश को ही नहीं, पूरे देश को आघात लगा है। मैं उनके प्रति अपनी तथा अपने दल की श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री अध्यक्ष–

मान्यवर, जहां तक ब्रेझनेव जी का संबंध है, माननीय सदन ने पूरे तरीके से अपने विचार प्रकट कर दिए हैं और उसके बाद मुझे कोई आवश्यकता नहीं रह जाती है कि

मैं इस सदन का और समय लूं । इन शब्दों के साथ मैं अपनी तरफ से और माननीय सदन की तरफ से और माननीय नेताओं ने जो भाव प्रकट किये हैं, मैं उनके परिवार तक पहुंचा दूंगा ।

(सभी सदस्य दो मिनट के लिए अपने-अपने स्थान पर मौन खड़े हुए ।)

(इसके बाद सदन 2 बजकर 15 मिनट पर सोमवार, 7 फरवरी, 1983 के 11 बजे तक के लिये स्थगित हो गया ।)

लखनऊ :

2 फरवरी, 1983 ।

भाल चन्द्र शुक्ल,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश ।

विधान सभा सचिवालय उत्तर प्रदेश